अखिल भारत सर्व-सेवा-संघ का साप्ताहिक मुखपत्र

भूदान-यज्ञ

भूदान-यज्ञ मूलक ग्रामोद्योग प्रधान अहिंसक क्रान्ति का सन्देशवाहक

वार्षिक मूल्य ६) ■ सम्पादक : धीरेन्द्र मजूमदार ■ एक प्रति २ आना

वर्ष-३, अंक-२५ ■ राजघाट, काशी ■ शुक्रवार, २२ मार्च, '५७

हम कुटुंब-पद्धति को खतम नहीं करना चाहते, बल्कि कुटुंब तो बुनियाद है ! कुटुंब है, इस वास्ते त्याग का, प्रेम का अभ्यास होता है। अतः कुटुंब तो हम चाहते ही हैं। ईश्वर की रचना कितनी दयालु है कि उसने हरेक बच्चे को माता दी है, और पैदा होते ही दूध के साथ प्रेम की तालीम उसको मिलती है ! ईश्वर ने ऐसी योजना नहीं की होती, तो प्रेम सिखाने की योजना स्कूलों में करनी पड़ती ! उसमें क्या-क्या होता पता नहीं ! जैसे अक्षर-ज्ञान कराते हैं, उसी तरह प्रेम सिखाना पड़ता। फिर सरकार भी प्रेम का बँटवारा करती। किसी को ज्यादा, किसी को कम, किसी को कुछ नहीं, ऐसा पक्षपात भी होता ! इससे समाज में कितनी निठुरता बढ़ती ? पचासों झगड़े पैदा होते ! पर ये झगड़े ईश्वर ने खतम ही कर दिए हैं। इसलिए ईश्वर की यह योजना हम तोड़ना नहीं चाहते, परिवार को खतम करना नहीं चाहते। लेकिन हम चाहते हैं परिवार को बड़ा बनाना। एक परिवार के सदस्यों में जो प्रेम और कर्तव्य का दर्शन-तकलीफ़ों और कुटुम्ब में बुरे-भले सदस्य होने के बावजूद-होता है, वही दर्शन हमें अब गाँव में और समाज में व्यापक करना है।

—विनोबा

एक चिंतन और योजना :

सन् सत्तावन् की क्रांति कैसे होगी?

(ठाकुरदास बंग)

सत्तावन् की क्रांति कैसे होगी, इस संबंध में सारे देश में उत्सुकता है। भूदान-प्रेमियों के दिमाग़ों में भी इस विषय में प्रश्न उठते हैं। भूदान-कार्यकर्ता शिविरों में भी इस सवाल को पूछते हैं। आखिर इसका उत्तर तो विनोबाजी ही देंगे। लेकिन इस विषय पर कार्यकर्ताओं को भी सोचना चाहिए। भूदान-जगत् में इस विषय पर चिन्तन चले, इसलिए मैं कुछ प्रकट चिंतन "भूदान-यज्ञ" के द्वारा करना चाहता हूँ। मुझे विश्वास है कि अन्य सहयात्री भी इस विषय पर "भूदान-यज्ञ" के द्वारा प्रकाश डालेंगे और आज धुंधला-सा लगने वाला भूदान-आरोहण आलोकित करेंगे।

चुनाव से, दलगत राजनीति से या राज्यसत्ता से भूमिक्रांति, सत्तावन् में तो क्या, पचास साल में भी नहीं हो सकती, यह दस साल के शासन के अनुभव से एवं भूदानयज्ञ के प्रचार से जनता कुछ-कुछ समझने लगी है। भूदानयज्ञ में ४२ लाख एकड़ की भूमिप्राप्ति और २००० ग्रामदान लोगों को चमत्कार जैसा लगता है। लेकिन जयप्रकाशजी के शब्दों में "हमें एक ऐसा अपूर्व नेता मिला है, जिसका लक्ष्य बहुत ऊँचा है और जो सत्तावन् में भूमिहीनता मिटाने की, ग्रामदान की बात करता है।" लोगों की समझ में नहीं आता कि ४२ लाख एकड़ में से इतना बड़ा लक्ष्य एक साल में कैसे सिद्ध होगा ? मामूली गणित के हिसाब से यह असंभव ही लगता है। जवाब मिलता है कि क्रांति के गणित से यह काम होगा। तो वह क्रांति का गणित आखिर क्या है ?

१९५१ से १९५६ तक हमने सौम्य सत्याग्रह किया, लोगों को विचार समझाया। उन्होंने जो कुछ आंशिक दान दिया, वह लिया। अब हमें सौम्यतर सत्याग्रह करना है। यानी दूसरों को क्लेश तो नहीं देना है, आत्मक्लेश ही बढ़ाने हैं। तंत्रमुक्ति एवं निधिमुक्ति के द्वारा निश्चित वेतन एवं अनिवार्य मार्गदर्शन समाप्त हो गया है। अब आंदोलन को लगनेवाला पैसा हमें जुटाना पड़ेगा और जिले-जिले की स्थानीय परिस्थिति के नुसार आंदोलन का रूप क्या हो, इस विषय में हमें सोचना होगा। निधिमुक्ति के कारण शारीरिक क्लेश बढ़े हैं और तंत्रमुक्ति के कारण सोचने की भी ज़िम्मेवारी उठानी पड़ी है !

सत्तावन् के पूर्वार्ध में हमें क्रांति की तैयारी करनी है। यह तैयारी वैसे तो गत पाँच सालों से चल रही है। लेकिन अब एक दिन में भूक्रांति सम्पन्न हो जाय, इसकी तैयारी करनी है। ऐसी भूक्रांति के लिए एक नाटक की जरूरत हो सकती है ! मुमकिन है, २ अक्तूबर को क्रांति का नाटक हो और ३१ दिसंबर को प्रत्यक्ष क्रांति ही हो जाय !

यह नाटक कौन करेगा ? इसके समाचार एवं उसके स्वरूप का ज्ञान साढ़े पाँच लाख गाँवों में बसनेवाली जनता को कौन पहुँचायेगा ? चूँकि एक ही दिन में देश भर में यह काम करना है, अतः जाहिर है कि इस काम को उसी गाँव के लोग करेंगे। इसलिए हमें हर गाँव में ऐसे दो-चार लोग ढूढ़ने होंगे, जिन्होंने दान दिया हो, जिन्हें भूदान-आरोहण की मोटी-मोटी बातों का ज्ञान हो और जो एक निश्चित दिन पर इस प्रकार के नाटक का काम जनता से सम्पन्न करा सकें। कांचीपुरम् में जीवनदान का परिवर्तित रूप प्रकट हुआ था। ऐसे दस-बीस लाख सर्वोदय-सेवक हमें ढूँढ़ने चाहिए। सर्वोदय-सेवक की सारी शर्तों को ये आज न माननेवाले हों, तो इन्हें हम 'सहयोगी' कहेंगे। इन सेवकों की एवं सहयोगियों की क्रांति के लिए तैयारी करानी होगी। यह तैयारी भूदानयज्ञ-आंदोलन का फुरसत के समय काम करने से एवं सतत इसका चिन्तन करने से होगी। जैसे विवाहयोग्य लड़की के मातापिता घरगृहस्थी का सारा काम करते हैं, लेकिन उन्हें हर वक्त उसके लिए योग्य वर ढूँढ़ने की चिन्ता रहती है, वैसे ही अपने गाँव में क्रांति सम्पन्न करने की चिन्ता इन सेवकों को एवं सहयोगियों को होगी। इन्हें फुरसत के समय करने योग्य कार्यक्रम भी देना होगा।

यह कार्यक्रम कई प्रकार का हो सकता है, जैसे भूमिवितरण में मदद, वितरण के बाद आदाता को मदद, ग्रामदानी गाँवों में निर्माण काम आदि। इन सब कामों में सर्व प्रमुख काम यह माना जाना चाहिए कि साहित्य एवं भूदानपत्रिकाओं का प्रति-सप्ताह नियमित रूप से वाचन उस गाँव में सहयोगी या सेवक करें। फिर सप्ताह भर देहात में भूक्रांति की बात चलती रहेगी। शंकाएँ भी उठेंगी। उनका समाधान सहयोगी करेगा। कुछ आम शंकाओं का समाधान पत्रिकाओं में बराबर आता रहेगा। अतः पत्रिकाओं के आज के स्वरूप को भी बदलना होगा। पत्रिकाओं में काफी मैटर सरल भाषा में एवं सुबोध शैली में लिखना होगा। हमारी पत्रिकाओं के द्वारा विचार-प्रचार का काम काफी अच्छा हो रहा है, लेकिन ये विचार कई बार सरल भाषा में न रहने के कारण ग्रामीण जनता तक पहुँचते नहीं हैं। वैसे ही सामान्य विचार-प्रचार चलता है, लेकिन पत्रिकाओं द्वारा एक विशिष्ट कार्यक्रम कार्यकर्ताओं को दिया जा रहा है या पत्रिकाओं द्वारा आंदोलन चल रहा है, ऐसा भान नहीं होता है। अतः इस बारे में इष्ट परिवर्तन हमें करने होंगे।

यद्यपि बाज़ाब्ता ऐसे सर्वोदय-सेवक या सहयोगी कांचीपुरम् तक ढूँढ़े नहीं गये थे, तो भी आंशिक समयदान एवं बुद्धिदान बराबर गत सालों में माँगा जाता था और वह मिलता था। उसका उपयोग कैसे किया जाय, यह सब कार्यकर्ताओं की चिंता का विषय था। ये कार्यकर्ता इतने कम थे कि आंशिक समयदानियों से उनकी सहूलियत के समय काम लेना असंभव था। ऐसे सब आंशिक समयदानी सर्वोदय-सेवक एवं सहयोगी अपने इनिशिएटिव (अभिक्रम) से काम करने लगेंगे और इनके काम में न कोई अड़चन आवेगी, न शिथिलता ही आवेगी, यह मानना गगनविहार मात्र होगा। अतः इन्हें कौन जांबवान् बार बार याद दिलावेगा, इनके काम की बाधाओं को कौन हटावेगा ? अतः तकाजा लगाने वालों का और मदद करने वालों का एक दूसरा, पूरा समय देने वाला सेवकसमूह खड़ा करना होगा। ये सेवक इस आंदोलन की रीढ़ होंगे। इनकी संख्या आज की हजार-दो हजार कार्यकर्ताओं की संख्या से कई गुना होगी। विनोबाजी ने सन् सत्तावन् भर खुशी का जेल स्वीकार करने वाले एक लाख सेवकों का आवाहन किया है। जनवरी के प्रारंभ के 'भूदान-यज्ञ' में वह आवाहन आया है। ये सेवक दस-बीस गाँवों के क्षेत्र में अकेले या दो-तीन मिलकर बैठेंगे और अनेकगुना सर्वोदय-सेवक एवं सहयोगियों की मदद से अपने अपने क्षेत्र में निरंतर घूमते रहेंगे, ग्रामदान की एवं एक दिन में बँटवारे की हवा बनावेंगे, भूदान-पत्रिकाओं के ग्राहक गाँव-गाँव बनावेंगे, साहित्य घर-घर बेचेंगे, इनके सार्वजनिक वाचन की व्यवस्था सहयोगियों द्वारा एवं सर्वोदय-सेवकों द्वारा करेंगे, शंका-समाधान करेंगे और आंदोलन का "टेंपो" बढ़ावेंगे ! इससे गली, बाजार, सार्वजनिक स्थान, सभी जगह भूमिक्रान्ति की ही चर्चा सुनायी देगी !

www.vinoba.in

हमारी कथनी एवं करनी में संगति हो और आत्मक्लेश द्वारा सूक्ष्मतम सत्याग्रह का मार्ग और अधिक प्रशस्त हो, इसलिए पूरा समय देने वाले सेवक और दो कदम उठायेंगे : (१) ये सेवक सन् सत्तावन् भर भगवान् का जेल कबूल करेंगे। यानी सत्तावन् भर अपने-अपने घर नहीं लौटेंगे। इससे इन्हें अपना चिन्तन-सर्वस्व भूक्रांति के काम में लगाने में सहूलियत होगी, (२) वैसे ही, ये वर्षदानी अपनी सारी जमीन भूदानयज्ञ में समर्पण कर देंगे। 'जोतेगा उसकी जमीन', 'स्वामित्व-विसर्जन', 'सबै भूमि गोपाल की' ये नारे हमारी जबान पर रहते हैं, लेकिन हमारी अपनी मालकियत का हममें से बहुतों ने अभी तक आंशिक विसर्जन ही किया है! कई रचनात्मक संस्थाएँ भी जरूरत से ज्यादा जमीन रखती हैं। सत्तावन् में इस दृष्टि से तेज कदम उठने चाहिए। खुशी की बात है कि सर्व-सेवा-संघ ने अपने पीपरी-केंद्र (वर्धा के पास) की जमीन में से अतिरिक्त जमीन बाँटने का निश्चय किया है। अकोला जिला (विदर्भ) के श्री रामकृष्ण आड़े, वर्धा के श्री ज्ञानदेव कदम आदि अनेक साथियों ने १ जनवरी, १९५७ को अपनी सारी जमीन भूदान-यज्ञ में समर्पण कर दी। अन्य संस्थाएँ, वर्षदानी एवं भूदान-प्रेमियों को इस पर गंभीरता से सोच कर कदम उठाना चाहिए।

(१) एक लाख वर्षदानियों को एवं कई लाख सर्वोदय-सेवकों को एवं सहयोगियों को जुटाना, (२) गाँव-गाँव में पत्रिकाओं को पहुँचाना एवं उनके वाचन की व्यवस्था करना और (३) अपनी पूरी जमीन का स्वामित्व-विसर्जन, ये तीनों काम अब जल्द होने चाहिए। सन् सत्तावन् के ढाई मास निकल गये हैं। अभी भी काफी समय बाकी है। इस क्रांति की तैयारी का माध्यम भिन्न-भिन्न प्रांतों में भिन्न-भिन्न होगा। बिहार में १८ अप्रैल का भूवितरण इसका माध्यम बनेगा। उत्तर प्रदेश आदि कई प्रांतों में सामूहिक पदयात्राएँ इसका माध्यम बनेंगी। नाग-विदर्भ में ग्रामदान की हवा फैलाना, ग्रामराज-संमेलन, शिक्षक, युवक एवं विद्यार्थियों के संमेलन इस त्रिविध कार्यक्रम का माध्यम बन रहे हैं। अकोला, यवतमाल, अमरावती एवं वर्धा जिलों में वर्षदानियों की संख्या निरंतर बढ़ रही है। इनके बल पर एवं नागरिकों से और विद्यार्थियों से सम्पर्क साधकर अप्रैल एवं मई में सारे गाँवों की एक बार पदयात्रा, त्रिविध कार्यक्रम को पुष्ट करने के लिए, की जायगी।

क्या ऐसे एक लाख वर्षदानी हमें नहीं मिल सकेंगे? अन्य दोनों कार्यक्रम भी क्या संमेलन-पूर्व पूरे नहीं हो सकते? प्रत्यक्ष कार्य करने से ही पता चलेगा। लेकिन इस दिशा में जो थोड़ासा कार्य इधर हुआ है, उससे सब साथियों का उत्साह बढ़ा है। एक भी गाँव अभी तक ऐसा नहीं मिला, जहाँ से कोई-न-कोई वर्षदानी सालभर अपना घर छोड़ने के लिए तैयार न हुआ हो। गत छह सालों में हमारे कई काम एवं कई निश्चय कार्यकर्ताओं के अभाव में रुक गये। अतः इस समय हमें अपना सारा ख्याल पूरा समय देने वाले कार्यकर्ताओं को जुटाने में देना चाहिए। कल्पना कीजिये कि इस प्रकार लाखों पूरे एवं आंशिक समयदानियों की सेना यदि हम बनाते हैं, गाँवों का वातावरण पत्रिकाएँ एवं साहित्य के नियमित वाचन के द्वारा भूक्रांति से गूंज उठता है और अपनी पूरी जमीन छोड़कर यदि हम तीव्रता से आगे बढ़ते हैं, तो मानना चाहिए कि पहला वार (stroke) अच्छा हुआ। "First Stroke is half the battle !" फिर एक दिन सारे गाँवों में कागज पर बँटवारा करना आसान होगा।

एक दिन में साढ़े पाँच लाख गाँवों में, कागज पर ही क्यों न हो, जमीन का बँटवारा यदि लाखों सेवकों द्वारा सम्पन्न होता है, तो वातावरण प्रत्यक्ष क्रांति के लिए कितना अनुकूल बनेगा, इसकी कल्पना तो कीजिये! त्यौहारों को छोड़कर आज तक इस देश में कोई भी कार्यक्रम एक दिन में साढ़े पाँच लाख गाँवों में तो क्या, लाख-दो-लाख गाँवों में भी नहीं हुआ। जनता यदि सब गाँवों में कागज पर जमीन बाँट लेगी, तो इस देश में मिल्कियत की जड़ें ही हिल जायेंगी। लाखों सैनिकों का बल जुटाने पर यह कार्य असंभव नहीं है। इतनी मात्रा में सेवक न रहते हुए भी कुछ छुटपुट प्रयोग, देश में कहीं-कहीं एक दिन के कार्यक्रम के रूप में हुए हैं, जिनसे बड़ा बल मिलता है। बिहार में आज ही एक दिन में बीस-पच्चीस हजार गाँवों में जमीन बाँटने का आयोजन चल रहा है। जो दाता अपनी भूमि का तफसील नहीं बताता है, उसकी कोई भी जमीन बाँटने का आदेश विनोबाजी ने दे दिया है। कल गाँव की सारी जमीन प्रेम से खुद होकर बाँटने का नाटक इसीमें से निकलता है और किया जा सकता है। आखिर ९ अगस्त, १९४२ में 'भारत छोड़ो' का नाटक ही तो हुआ था न? उसीमें से जनमानस का विराट दर्शन अंग्रेजों को हुआ और एक दिन विदेशी राज्य समाप्त भी हुआ। उस समय जो गलतियाँ हुईं, उनसे बचते हुए एक दिन में कागज के बँटवारे का प्रयोग किया जा सकता है। यानी न तो जमीन पर कब्जा करना है और न ऐसा करना है कि अमुक की जमीन फ़लाने को दे दी! लेकिन गाँव में इतनी जमीन है और जमीन पर काम करनेवाले इतने व्यक्ति हैं, तो हर कुटुम्ब को, उनकी सदस्य-संख्या के अनुपात में इतने एकड़ गाँव की जमीन मिली, ऐसी घोषणा करनी है। 'आज से अब यह जमीन गाँव की हो गयी' यह घोषणा भी हो। इससे भूमिवालों का जमीन पर का नैतिक हक जनशक्ति द्वारा समाप्त हो जायगा। जो गरीब या अमीर इस बुनियाद पर अपनी सारी जमीन का पुनर्वितरण करने को तैयार हो, उसकी जमीन उस दिन प्रत्यक्ष में बाँट दी जायगी। इस प्रकार ध्येयनिष्ठ गरीब या अमीर की पूरी जमीन का प्रत्यक्ष वितरण एवं अन्यों की पूरी जमीन का संकल्पित वितरण होगा। हम सबकी अभिलाषा है कि इस नाटक को एक गाँव में विनोबाजी करें, दूसरे किसी गाँव में राष्ट्रपति जी करें, अन्य कुछ गाँवों में जयप्रकाश जी, नेहरूजी एवं कृपालानीजी करें। उसी दिन इन नेताओं के साथ साथ लाखों गाँवों में जनता वितरण करेगी। इससे अभी तक कभी नहीं हुई, इतनी बड़ी मानसिक क्रांति होगी और प्रत्यक्ष क्रांति का दिन नजदीक आवेगा। इसीसे प्रत्यक्ष क्रांति अमोघ बनेगी।

आगामी दस मास का कार्यक्रम कैसा हो ?

(विमला बहन)

सन् '५७ के दो माह बीत चुके। विनोबाजी की माँग है कि २ अक्टूबर '५७ से पहले भारतवर्ष के हर शहर में और हर गाँव में भूदान-मूलक ग्रामोद्योग-प्रधान अहिंसात्मक क्रांति का पैगाम पहुँचाया जाय। न सिर्फ पैगाम पहुँचाया जाय, बल्कि देश के हर नागरिक, आबाल-वृद्ध सब व्यक्तियों को इस क्रांति में शामिल होने की प्रार्थना की जाय। जनक्रांति का अर्थ ही यह है कि बच्चे-बूढ़े, स्त्री-पुरुष, अशिक्षित-सुशिक्षित, गरीब-अमीर और यहाँ तक कि बीमार-लूले और अपंग लोग भी समाज-परिवर्तन की प्रक्रिया में हाथ बँटा सकें। कोई तन से मदद करेगा, कोई धन की मदद देगा, कोई विचार समझायेगा, कोई जनमानस में क्रांतिकारी भावनाओं को भर देगा। कोई भूमिदान देगा, तो कोई गृहोद्योग और ग्रामोद्योगों को प्रोत्साहन देने के लिए ग्रामोद्योगी आहार का व्रत लेगा। कोई सूत कातेगा, तो कोई कम-से-कम एक वर्ष के लिए खादीधारी बनने का व्रत लेगा। कोई सर्वोदय के विचार-प्रचार में साहित्य-बिक्री द्वारा मदद देगा, तो कोई सर्वोदय-कलापथक बना कर क्रांति में कला और सौंदर्य को उँड़ेल देगा। तात्पर्य यह है कि इस वर्ष में इस देश में कोई भी ऐसा अभागा न रह जाय, जो इस पावन क्रांतिकार्य से अपने को अस्पृश्य रखेगा।

इस दृष्टि से भूदान-कार्यकर्ताओं को दस महीनों के कार्यक्रम का आयोजन करना चाहिए। बालकों के लिए, युवकों के लिए, शिक्षकों के लिए, स्त्रियों के लिए, सामान्य नागरिकों के लिए, राजनैतिक कार्यकर्ताओं के लिए, रचनात्मक कार्यकर्ताओं के लिए, साहित्यिकों के लिए, चित्रकार-शिल्पकारों के लिए तथा कलाकारों के लिए प्रत्यक्ष कार्यक्रम बना कर उनका सहयोग लेना चाहिए। 'योगः कर्मसु कौशलम्।' अहिंसक क्रांति में सहयोग की कला सीखना अत्यावश्यक है। स्नेह का विज्ञान सीखना अनिवार्य है। संयम की सामुदायिक उपासना ही अहिंसा का सामुदायिक अनुष्ठान कहलाता है।

परिवार बढ़ाने का अर्थ

···परिवार बढ़ाना है याने क्या करना है? गाँव में ४००,५०० घर हैं। तो क्या हम अपने अलग-अलग घर मिटा दें और जैसा एक होस्टल रहता है, वैसे बड़े घर में सब रहें? हमारी अलग-अलग रसोई होती है, तो क्या होटल में जाकर सब खायें? हमारी जमीन अलग अलग है, तो क्या वह सब एक बना कर, सारे मिलकर ट्रैक्टर से खेती करें? ऐसा नहीं करना है। सहूलियत के लिए अलग अलग घर होगा। हरेक की रसोई अलग होगी। परिवार के हिसाब से जमीन भी हरेक को दी जायेगी। परंतु निजी मालकियत नहीं रहेगी। गाँव की जमीन पर सबका हक होगा। सबका सुख-दुःख एक होगा।

—विनोबा

---

www.vinoba.in

भूदान-आंदोलन की आध्यात्मिक भूमिका

(विनोबा)

हिंदुस्तान में भक्ति-पंथ जितना फैला, उतना और कोई पंथ नहीं फैला। परंतु हिंदुस्तान के भक्ति-पंथ की यह खूबी रही कि बिना आत्मज्ञान के आधार के कोई भक्ति-पंथ यहाँ नहीं चला। फिर वह शैव-सिद्धांत रहा हो, शांकर-वेदांत रहा हो, रामानुज-वेदांत रहा हो या अन्य कोई सिद्धांत। इस तरह भारत में आत्म-ज्ञान की बैठक पर ही भक्तिमार्ग की स्थापना हुई।

दूसरी बड़ी बात यहाँ के भक्ति-मार्ग की यह है कि वह सब लोगों के जीवन के साथ ओतप्रोत है। वह जीवन को टालने वाला भक्ति-मार्ग नहीं, जीवन को सुशोभित करने वाला है, इसलिए उसका घर-घर में प्रवेश भी है। यह बात भारत के बाहर दूसरी जगह हमने कम पायी है। यहाँ गाँव-गाँव में मंदिर होते हैं। घर-घर में भी 'देवघर' (ठाकुर-बाला) होता है। इतना ही नहीं, कुछ लोगों के शरीर पर भी देवता अंकित रहते हैं! व्यवहार के हरेक क्षेत्र में भक्ति का संबंध होना चाहिए, ऐसी मान्यता इस देश में है। परंतु जहाँ भक्ति का ज्ञान से संबंध नहीं होता, वहाँ भक्ति मूढ़ श्रद्धा बन जाती है और जहाँ जीवन के साथ उसका संबंध नहीं होता, वहाँ वह निर्जीव बन जाती है, मरने के बाद के काम की बन जाती है।

भारत में स्कंदपुराणम्, शिवपुराणम्, रामायणम्, भागवतम् आदि की कथाएँ केवल पुस्तकों में नहीं रही हैं, लोगों के जीवन में दाखिल हो गयी हैं! राम-लक्ष्मण इत्यादि हर परिवार के अंग हो गये हैं। होमर का महाकाव्य बड़ा प्रसिद्ध है। उसका असर योरप के कुल साहित्य पर हुआ है। परंतु लोक-जीवन में होमर का प्रवेश नहीं है। होमर के महाकाव्य के पात्र साहित्यिकों के विषय रह गये। परंतु हिंदुस्तान में राम, सीता, लक्ष्मण, धर्मराज, भीम, अर्जुन, कृष्ण-रुक्मिणी इत्यादि हमारे परिवार के अंग बन गये। अपनी मिसाल देकर कहूँ, तो मेरे दो सगे भाई हैं, लेकिन उन दोनों भाइयों के जीवन का मुझे उतना ज्ञान नहीं है, जितना राम-लक्ष्मण और भरत के जीवन का है! मुझे अगर कहा जाय कि "अपने भाइयों का चरित्र तू लिख," तो मुझे उनसे कुछ बातें पूछनी ही पड़ेंगी, तब मैं वह लिख सकूगा! कुछ तो मैं जानता हूँ, लेकिन कुछ तो पूछना ही पड़ेगा! पर राम, लक्ष्मण, भरत का बिलकुल पूरा का पूरा चरित्र मेरी आँखों के सामने खड़ा है। हिंदुस्तान के बहुत सारे लोगों का यही हाल है। इन चीजों ने हमारा जीवन बनाया है। इसका एक ही कारण है कि यहाँ का भक्तिमार्ग जीवन के साथ संबंधित रहा। उसमें संकुचित भावना नहीं रही। उसका कारण यह है कि भक्ति-मार्ग को उसने ज्ञान का आधार बनाया। तत्त्वज्ञान में जितना फर्क रहा, उतना भक्ति-मार्ग में भी रहा, परंतु जो संकुचित भावनाएँ योरप के धर्म-भक्ति-मार्ग में देखीं, वे हिंदुस्तान के भक्ति-मार्ग में नहीं देखी, वे हिंदुस्तान में भक्ति-मार्ग में नहीं पायीं।

कोपरनिकस और गॅलेलियो जैसे वैज्ञानिक निकले, जिन्होंने सृष्टि के बारे में कुछ बातें बतायीं। वे बातें बाइबिल के सृष्टि-क्रम के अनुकूल नहीं थीं, इसलिए लोगों ने उनको पीड़ा दी। गॅलेलियो को सता-सता कर कहा गया कि तुम लिख दो कि पृथ्वी नहीं घूमती है। पीड़ा की अधिकता के कारण बेचारे ने लिखने के लिए कलम भी उठायी, परंतु उसका भी हाथ झुक गया। वह बोला, "मैं क्या लिखूँ, मैं नहीं चाहता कि पृथ्वी घूमे! लेकिन वह कम्बख्त घूमती ही है! अब मैं यहाँ कैसे लिख दूँ कि वह नहीं घूमती है? जो स्पष्ट ज्ञान है, उसका विरोध कैसे किया जाय?"

पर हिंदुस्तान के कुल इतिहास में ऐसा कोई किस्सा नहीं हुआ, बल्कि भाष्यकारों ने तो ऐसा लिख रखा है कि वेद में जो कुछ भी हो, परंतु भौतिक विज्ञान के विरुद्ध कुछ हो ही नहीं सकता। जिस ज्ञान का भौतिक विज्ञान से संबंध नहीं है, उस ज्ञान से वेद का संबंध नहीं है। "नहि श्रुति शतमपि अग्निः अनुष्णः इति ब्रुवत् प्रामाण्यं उपति।" सैंकड़ों श्रुतियाँ भी कहें कि अग्नि ठंडा है, तो वह प्रमाण नहीं हो सकता। प्रत्यक्ष ज्ञान के साथ, श्रुति-वेद का विरोध हो ही नहीं सकता, यह गीता के भाष्य में शंकराचार्य ने लिख रखा है। इसलिए सृष्टि-विज्ञान या अन्य विज्ञान के साथ धर्म का कोई झगड़ा हिंदुस्तान में न कभी हुआ है, न कभी-हो सकता है, क्योंकि यहाँ का भक्ति-मार्ग ज्ञान पर खड़ा किया गया है। इधर जीवन के साथ संबंध रखने से और उधर ज्ञान के साथ जीवन रखने से भक्ति-मार्ग बहुत ही मधुर और बड़ा ही लाभदायी रहा। भक्ति-मार्ग में इससे अधिक तारकत्व जीवन के लिए हो नहीं सकता है।

बाबा का यह दावा है कि यह आंदोलन "स्पिरिच्युअल वैल्यूज" बदलने का, भक्ति-मार्ग की स्थापना का, धर्मचक्र-प्रवर्तन का आंदोलन है। इसलिए कुंद्रकुडि, अडिगळार जैसे धर्म-पुरुष लोग इसमें काम करते हैं। यह हिंदुस्तान का ख्याल ही नहीं है कि भक्ति-मार्गी मनुष्य व्यवहार-शुद्धि में क्यों लगा है? यह हिंदुस्तान की विचार-पद्धति नहीं है, बल्कि हिंदुस्तान की विचार-पद्धति यही है कि जीवन के हर हिस्से में भक्ति का प्रवेश होना चाहिए।

दुनिया के दूसरे देशों के धर्म-ग्रंथों में क्या आप यह पाते हैं कि बड़ी फजर उठें, फिर मुँह-हाथ धोकर शौच के लिए जायें, फिर स्नान करें, इत्यादि? ये चीजें धर्म-शास्त्र को वहाँ मानो ही नहीं जाती हैं। हाँ, यह कहा जायेगा कि मंदिर में प्रवेश करते समय हाथ-पाँव धोकर, स्वच्छ होकर जाना चाहिए, इत्यादि। परंतु रोज के दिन-क्रम की बातें धर्म-शास्त्र के अंदर शामिल नहीं हैं। "हाईजीन, सैनीटेशन" का सारा विचार विज्ञान का विचार माना जाता है। पर ये कुछ के कुछ विषय हिंदुस्तान के धर्म-शास्त्रों में शामिल हैं। सारांश, सारे जीवन को सुधारना यहाँ भक्ति-मार्ग का एक अंग माना गया है! यही हिंदुस्तान का भक्ति-मार्ग है।

भक्ति-मार्ग की विपरीत राह!

लेकिन बीच के जमाने में हिंदुस्तान में भी भक्ति-मार्ग और ज्ञान-मार्ग, दोनों बड़े एकांगी बन गये। जब परदेशी लोगों के हिंदुस्तान पर हमले हुए, जब मुसलमानों के अमल में लोगों ने मार और हार खायी, तब लोगों ने फिर निवृत्तियुक्त भक्ति-मार्ग का आश्रय ले लिया। उनको लगा कि अब यह सारा व्यवहार-कारोबार अपने हाथ में नहीं रहा, तो और क्या करें? थोड़ी उपासना करें, कुछ आराधना-पूजन करें; इस तरह अपना कुछ हिस्सा उन्होंने बचा कर रख दिया। सबका सब शत्रुओं के हाथ में जा रहा था, तो लोगों ने अपना थोड़ा-सा यह सोच कर बचा लिया कि चलो भाई, इतना तो बच जाय! फलतः हिंदुस्तान में छोटा-सा भक्ति-मार्ग शेष रह गया। वह भक्ति-मार्ग डरे हुए लोगों का, हारे हुए लोगों का भक्ति-मार्ग था! जितना बचा कर रख सकते थे, उन्होंने रख दिया। फिर कई जगह से मूर्तियाँ लेकर वे भाग गये, कई मूर्तियाँ तालाब में डाल दीं। जब हमला और हमलेवर चले गये, तब मूर्तियों को बाहर निकाल कर उनकी पुनः स्थापना की। यह सब हारे हुए लोगों द्वारा धर्म बचाने की चेष्टा थी। फिर जो धर्म मार्ग चला, वह राज्यकर्ताओं का विरोध टाल कर चला। इसलिए उसका रूप यह हो गया कि धर्म का व्यवहार के साथ कोई संबंध नहीं रहा, तुम्हारा व्यवहार तुम जानो, राजा हिंदू हैं या मुसलमान, बुद्ध हैं या जैन, हमें इससे कोई संबंध नहीं है। दुनिया में क्या तालीम दी जा रही है, क्या दंड-नीति चलती है, समाज की आर्थिक रचना क्या है, अर्थ का धर्म से क्या संबंध है; इनसे हमारा कोई वास्ता नहीं! इस तरह कह कर एक बचा हुआ भक्तिमार्ग उन्होंने कायम रखा। उत्तर हिन्दुस्तान में ज्यादा से ज्यादा आक्रमण हुआ! यहाँ तक कि बहनों को घर से बाहर आने पर भी रोक लगी। मुँह ढाँकना कुलीनता का लक्षण माना गया। पुरुष और स्त्री एक-दूसरे में मिश्रित दिखे कि वे नीची जातियाँ मानी गयीं और उसीको हिंदू धर्म कहा गया! मुझे उनको समझाना पड़ता कि मूर्खो, हिंदू धर्म यह नहीं है, यह तो आक्रमण है! जैसे पाँच सौ साल तक मुसलमानों का यहाँ पर राज्य चला, वैसे यहाँ अंग्रेजों का भी डेढ़-दो सौ साल तक राज्य चला। फलतः मई का महीना हो एवं खुले बदन भी पसीना-पसीना हो जाता हो, तो भी क्या मजाल है कि लोग बिना कोट, पैण्ट, टाई पहने आफिस जायें, क्योंकि उनको तो बड़े साहब का अनुकरण जो करना है! परंतु यह अनुकरण ऊँची जमात वाले ही करते थे, क्योंकि छोटे किसान लोग तो खेत में रहते थे! जिनको नौकरी पानी थी और जो ऊँची जाति के माने जाते थे, उन सबको अंग्रेजमय बनना था! लेकिन इस समय भी अंग्रेजों का अनुकरण 'धर्म' नहीं माना गया। परंतु मुसलमानों के जमाने में उत्तर हिंदुस्तान पर उनका इतना आक्रमण हुआ कि स्त्रियों को बाहर जाने देना अधर्म माना गया और घर में रहने देना धर्म!

अजमेर के दरगाह-शरीफ में एक बार सैंकड़ों मुसलमानों ने हम पर प्यार बरसाया! लेकिन नमाज के समय एक भी स्त्री मैंने वहाँ नहीं देखी, तब हमने उनसे भी कहा कि "स्त्री-पुरुष-भेद परमेश्वर के सामने तो मत रखो!" रामचंद्र यज्ञ करना चाहते थे। उस समय सीता को वाल्मीकि आश्रम में पहुँचाया गया था। वशिष्ठ ने कहा, गृहस्थाश्रमी पुरुष अकेला यज्ञ नहीं कर सकेगा, राम के साथ सीता होनी चाहिए। तब मृण्मयी सीता बनायी गयी। रामचंद्रजी यज्ञ के लिए बैठे और नजदीक मिट्टी की सीता रखी गयी! मुझे यह याद नहीं है कि वह मिट्टी की थी या सुवर्ण की। जो भी रही हो, मूर्ति थी! मैं भूदान के लिए निकला हूँ, इसलिए मुझे मिट्टी ही ज्यादा याद आती है!

www.vinoba.in

ईश्वर की उपासना यज्ञ का रूप है। अगर आप ब्रह्मचारी और संन्यासी हैं, तब तो ठीक है, आप अकेले रह कर सकते हैं, परंतु जो पत्नी, सहधर्मचारिणी कहलाती है, उसको यज्ञ-कार्य में साथ न लें—गृहस्थ होते हुए भी आप अलग, वह अलग, यह हो नहीं सकता। लेकिन उत्तर हिंदुस्तान में यह चल रहा है! स्त्रियों को जेल के जैसा ही रखा जाता है और वह धर्म भी माना जाता है! वास्तव में जो अधर्म है, वह धर्म माना गया। परकीय आक्रमण के परिणाम-स्वरूप यहाँ के भक्ति-मार्ग को गलत स्वरूप मिला, इसलिए ऐसा हुआ।

बाबा जिस काम के लिए घूम रहा है, उससे लोगों को जमीन मिलती है और ऐहिक जीवन सुधारने की भी बातें होती हैं। बीच के जमाने में भक्त लोग ऐसा नहीं करते थे। इसलिए "बाबा का यह कार्य ऐहिक है, भौतिक है, लौकिक है और वह आध्यात्मिक, भक्ति-मार्गी नहीं है," ऐसा कहते हैं! हम कहना चाहते हैं कि भक्ति और धर्म का यह विचार बिल्कुल गलत और एकांगी है, वह पूरा भक्ति-मार्ग नहीं है। हाँ, भक्ति-मार्ग लोगों के व्यवहार में पड़ कर उन पर कोई चीज लादेगा नहीं। अगर हम यह कोशिश करते कि कानून के जरिये जमीन का वितरण हो या जमीन दबाव से छीन ली जाय, तब तो वह भौतिक-लौकिक आंदोलन जरूर होता। परंतु लोगों की करुणा-बुद्धि को जाग्रत करके, उनको कर्तव्य का भान कराके, आत्मा की व्यापकता समझा करके जब हम भूदान मांगते हैं, तो लोगों को हम परिशुद्ध धर्म ही समझाते हैं।

(कुंड्रकुडि, रामनाड, १९–२)

तमिलनाड़ की क्रांति-यात्रा से–

(महादेवी)

पू० बाबा की यात्रा में अब तक दो बहिनें थीं। वार्ता आदि अच्छे ढंग से वे दिया करती थीं। अब उनको बाबा ने स्वतंत्र काम करने के लिए भेजा है। एक दिन बाबा ने मुझसे कहा, "तुम थोड़ा लिखा करो।" मैं तो पू० बाबा की सेवा ही अपना काम मानती हूँ। लेखन आदि करने का मुझे अभ्यास भी नहीं है। फिर भी बाबा का आदेश हुआ, इसलिए इस वक्त कुछ लिखा है। यात्रा का सम्पूर्ण दर्शन मैं तो नहीं करा सकती हूँ। थोड़ा मनोरंजक अंश, जो मुझे ग्रहण हुआ, लिख डाला है।

आजकल पू० बाबा ने सुबह सवा तीन बजे उठना शुरू किया है। इसके पहले ढाई बजे उठते थे। वेदाध्ययन करते थे। उससे उनको कुछ थकान महसूस होने लगी। १०-१२ मील चलने का भी आग्रह रखते हैं। इस बीच में बाबा बीमार भी पड़े थे। कुछ अधिक विश्रांति मिले और साथियों को भी पूरी नींद मिले यह ख्याल है। बाबा नींद को बहुत महत्त्व देते हैं। निद्रा कर्मयोगी की समाधि है, निद्रा में विचार का विकास भी होता है, ऐसा वे कहते हैं। इन सब कारणों से सवा तीन बजे उठने लगे। पहले यात्रा के निकलने का समय निश्चित था। आजकल पहुँचने का समय निश्चित करने का प्रयत्न चल रहा है। अन्तर के अनुसार निकलने का समय तय करते हैं, क्योंकि पहुँचने का समय निश्चित हो, तो निकलने के पहले अध्ययन के लिए कुछ एकान्त समय मिले और निश्चित समय पर पहुँचने से लोगों को सुविधा हो, ऐसा बाबा कहते हैं।

ता. ७-९-५६ से बाबा ने तुलसी-रामायण का श्रवण शुरू किया। हम सब यात्री मिल कर के गाते हैं। स्नान के बाद ठीक दस बजे शुरू होता है। नागरी-प्रचारिणी सभा काशी के रामचरित-मानस की प्रति है, क्योंकि उस प्रति में ह्रस्व–दीर्घ मात्राओं की भिन्नता दिखाई है, जो दक्षिण भारत की भाषाओं में प्रचलित है (अ. ए. ऑ. ओ.)। उससे पढ़ने वालों को गायन की सुविधा होती है।

रामायण के विरुद्ध विचारधारा भी यहाँ कुछ लोगों में है और रामायण पर हुए बाबा प्रवचन के बारे में देश के कुछ लोगों में गलतफहमी भी हुई है और इधर बाबा का रोज रामायण-श्रवण चलता ही है। "काहू के मन की कोउ न जानत" ऐसी बात है।

अब रामायण के साथ 'गीताई' का भी अध्ययन ६ फरवरी से शुरू किया है। ६ फरवरी १९३१ में ही बाबा ने 'गीताई' की रचना पूर्ण की थी। उसकी स्मृति में उसी तारीख को १८ वें अध्याय से पठन शुरू किया। आश्रम में साप्ताहिक गीताई-पाठ करने का रिवाज था। उसके लिए समय भी अधिक लगता है। बोझ भी न हो, चिंतन साथ-साथ चले, इस दृष्टि से २१ दिन का पाठ शुरू किया है। रामचरित-मानस और गीताई मिल कर रोज आधा घण्टा मध्याह्न-प्रार्थना के रूप में चलता है।

ता. २-३-५७ को तिरुमंगलम् तालुके में दुबारा प्रवेश किया। यहाँ के सेवकों ने तालुका-दान का संकल्प किया है। इसके लिए बाबा की यह दूसरी यात्रा है। यह प्रेरक यात्रा है! इस तालुका में अभी तक ८० ग्रामदान मिले हैं। तिरुमंगलम् तालुका के दीन-दुखी लोगों ने आशापूरित आँखों से बाबा का स्वागत किया, यद्यपि दूसरी ओर चुनाव का धूम-धड़ाका चल रहा है, चुनाव भूदान-गंगा को कभी रोक ही नहीं सकता था!

एक भाई ने पूछा, "ग्रामदान के कारण ग्राम स्वावलम्बी होगा, समृद्धि बढ़ेगी, तो शहर के लोग आकर्षित होकर ग्रामों के ऊपर आक्रमण न करेंगे?"

बाबा ने कहा: वह अच्छा ही है। उनको भी जमीन और उद्योग देना ही पड़ेगा। शहर और गाँव के बीच आज के जैसा विरोध नहीं, बल्कि सहकार रहेगा। गाँववाले गाँव की चीजें बनायेंगे, शहर को मदद करेंगे और शहरवाले विदेश से जो चीजें आती हैं, वे बनायेंगे। इस तरह विदेशी चीजों के आक्रमण को रोकेंगे।

प्रश्न: ग्रामराज्य के बाद केंद्रीय सरकार का क्या काम रहेगा?

बाबा ने कहा: "उस वक्त—

— गाँव गाँव के बीच संबंध जोड़ना,
— रेल, डाक आदि सेवाकार्य,
— खदान-काम (mines) आदि बड़े उद्योग,
— विदेशों से संबंध,
— संरक्षण की सँभाल, (जब तक ज़रूरत हो)
— सलाह आदि देते रहना"

ये काम रहेंगे।

बाद में धीरे-धीरे केंद्रीय सरकार की सत्ता क्षीण होती जायगी।

खेती के बारे में चर्चा करते हुए बाबा ने कहा: प्राचीन साहित्य में खेती को बहुत महत्त्व दिया है। अर्वाचीन साहित्य में उतना ज़िक्र नहीं आता। तमिळ, चीनी और संस्कृत भाषाओं में खेती को बहुत महत्त्व दिया है। वस्तुतः वह उस भाषा का महत्त्व नहीं है, काल का महत्त्व है।

आगे कहा, तमिळ, चीनी और संस्कृत भाषाएँ प्राचीन होते हुए भी अर्वाचीन हैं। संस्कृत बोलने की भाषा न होते हुए भी भारत में उसका मातृभाषा के बराबर या अधिक भी अध्ययन करते हैं। आगे यह और भी बढ़ेगा।

उस्मानाबाद जिले के एक बढ़ई अचानक बाबा के पास दो महीने पहिले आये थे। उनको लगा था कि भूदान-गंगा वहाँ पहुँची नहीं है, अतः उसका प्रवाह वहाँ भी हो। बाबा ने उनको अंबर चरखा बनाना सीखने के लिए तिरुपुर भेजा था। डेढ़ महीने के बाद वे सीख कर वापिस आये। उन्होंने अपने हाथ से बनाये हुए अंबर चरखे से सूत कात कर बाबा को दिया, तो बाबा को अपने पिताजी का स्मरण हो आया। एक बार पिताजी ने बाबा को पत्र लिखा था। उसमें उल्लेख किया था कि "यह कलम, स्याही और कागज भी मेरे हाथ से बनाये हुए हैं। कागज में कुछ नीला रंग रह गया है, प्रयोग से वह भी जा सकता है।"

× × ×

फ्रांस की ७५ साल की वृद्धा केमॅल ड्रावेट आयी थीं। बिल्कुल छोटा गाँव था। कोई वाहन की सुविधा खास नहीं थी। अकेली थीं। कहती थीं, सुबह ६ बजे करीब पड़ाव पर पहुँच गयी थी और उत्सुकता से बाबा की प्रतीक्षा कर रही थी। पूछने पर उन्होंने बताया, एक छोटे स्टेशन पर रात निकाली। अपने जीवन का परिचय देते हुए उन्होंने कहा, उसके पति पहले महायुद्ध में मारे गये। तब से समाज-सेवा करती है। हमसे पूछ रही थीं, "विनोबा कब पहुँचेंगे?" हमने कहा, "साढ़े आठ बजे।" "कितने मील चलते हैं?" "१०-१२ मील।" "इतने?" वात्सल्य भरे भाव से फिर कहा, "इतनी धूप में? कमजोर शरीर है। थक जाते हैं न?" बाबा आ ही रहे हैं, यह सुन करके वह वृद्ध माता उत्सुकता से दौड़ीं, जैसे तरुण लड़कियाँ दौड़ती हैं। उनको ४-५ घंटा ही रहना था! बाबा से बात-चीत करते हुए उन्होंने कहा, हमारे वहाँ कश्मकश चलते ही रहती हैं। सच पूछे तो आल्जीरिया को स्वतंत्रता देनी चाहिए। लेकिन फ्रांस की मूर्ख सरकार मानती नहीं है। उन्होंने बाबा को एक पत्र लिख कर दिया। उसका सारांश इस प्रकार है–

"फ्रांस में एक गांधी-मित्र-मंडल है। उसकी मैं सेक्रेटरी हूँ। गांधी-मित्र-मंडल के लोग भूदान के बारे में काफी दिलचस्पी लेते हैं। आल्जीरिया का प्रश्न हल होने के बाद भूदान-विचार धारा के अनुसार हम लोग कुछ करना चाहते हैं। वहाँ के मित्र-मंडल के लोग आपको नम्रतापूर्वक प्रणाम कहते हैं।"

www.vinoba.in

प्रश्नोत्तरी

(धीरेन्द्र मजूमदार)

प्रश्न :—१५ फरवरी के 'भूदान-यज्ञ' में आपने "लोक-सेवकों की कसौटी" शीर्षक लेख में लिखा है : "अब उनका अपना कर्तृत्व नहीं रह जाता और न वे अब कार्यकर्ता ही रहे हैं। कार्यकर्ता सारी जनता रही है।" अगर लोक-सेवक का कोई कर्तृत्व नहीं रह गया, तो क्या वह जड़वत् रहेगा ? यानी उनका कोई काम नहीं रहेगा ?

उत्तर : काम क्यों नहीं रहेगा। पर क्या काम रहेगा, यह तो मैंने उसी लेख में बताया है। मैंने जो 'कर्तृत्व नहीं रहेगा' यह बात बतायी है, वह केवल आन्दोलन-संचालन की भूमिका में ही है। इसका कर्तृत्व तो सीधे जनता के हाथ में होगा। सेवक केवल जनता को इस कर्तृत्व के लिए उद्बोधित करेंगे और उनका मार्ग-प्रदर्शन करेंगे। यानी वे जन-कर्तृत्व के सहायक होंगे। यह सही है कि यह एक नया विचार है। जिस तरह हजारों वर्षों से शूद्र यह मानता आया है कि ब्राह्मणों के पादोदक से हमारी उन्नति होगी, तो इसके विपरीत विचार फैलने पर आम तौर से शूद्रों को परेशानी हुई कि अब हमारा उद्धार कैसे होगा ? उसी तरह हजारों वर्षों से सत्तावाद तथा नियंत्रणवाद की मान्यता के कारण आज हमें परेशानी हो रही है कि सेवक अगर कर्ता नहीं होगा, नियंत्रण नहीं करेगा, तो आंदोलन चलेगा कैसे ? लेकिन हमें विचारपूर्वक इस भ्रम को दूर करना होगा और जनता की स्वयं-प्रेरणा तथा स्वयं-कर्तृत्व का झरना खोद कर निकालना होगा।

प्रश्न : तात्विक दृष्टि से विचार करने पर आप लोगों की बात ठीक लगती है। लेकिन जब हम भूदान-आन्दोलन की भूमिका में विचार करते हैं, तो आप सब नेताओं की तर्कशुद्ध दलीलों के बावजूद व्यावहारिक दृष्टि से समाधान नहीं होता। यह ठीक है कि सत्याग्रही लोकसेवक तंत्र-मुक्त हो गये, सर्व-सेवा-संघ या किसी समिति का अनुशासन उन पर नहीं रहा। वे अपनी प्रेरणा और बुद्धि से अपने-अपने क्षेत्र में काम करेंगे। लेकिन जब वे इस तरह से बिखरे हुए रहेंगे, तो एक राष्ट्र-व्यापी आन्दोलन और विचार तथा अनुभव का विनिमय कैसे चलेगा ?

उत्तर : 'तंत्र-मुक्ति' का मतलब 'संघ-मुक्ति' नहीं है। संघ का विचार होता है और तंत्र का कानून। हम सब तंत्र-मुक्त होने पर भी एक संघ के लोग हैं, यह सबको महसूस करना चाहिए और अधिक विचार और अनुभव रखने वाले की मदद लेनी चाहिए। चेतनों के बीच चेतन का सम्बन्ध रहेगा, विधान का नहीं। परस्पर-सहयोग के लिए सम्मेलन का आयोजन करना होगा, समिति का संगठन नहीं। किसी एक सेवक की प्रेरणा हुई; उसने सबको बुलाया; आमंत्रित किया। संमिलित आमंत्रितों में से कोई दूसरा आमंत्रित करेगा और उसे प्रकाशित करेगा। इस तरह सम्मेलनों का सिलसिला चल सकेगा। सम्मेलनों में विचार-मंथन होगा। योजनाओं पर चर्चा होगी, लेकिन प्रस्ताव पास नहीं होगा। वहाँ की चर्चा में से जिनको जिस प्रकार की प्रेरणा एवं मार्ग-दर्शन मिलेगा, वे काम करेंगे।

प्रश्न : विनोबाजी रोज़ नया-नया शब्द गढ़ते रहते हैं। अभी हाल में लोक-सेवक के साथ 'सत्याग्रही' संज्ञा लगायी गयी है। आखिर इसकी आवश्यकता क्या थी ? क्या इससे लोक-सेवक को अहंकार न होगा ?

उत्तर : विनोबाजी की कल्पना के लोक-सेवक को सत्याग्रही लोक-सेवक ही कहना होगा, क्योंकि आज 'सत्याग्रह' शब्द का ही दुरुपयोग होने लगा है। आज तो लोग नाना प्रकार की माँगें पूरी कराने के लिए-यहाँ तक कि सत्ता-प्राप्ति के लिए भी सत्याग्रह की बात करते हैं। बहुत जगह तो दुराग्रह भी सत्याग्रह के नाम से प्रचलित हो गया है। इसलिए विनोबाजी की कल्पना के लोक-सेवक पर इस शब्द के शुद्धिकरण की जिम्मेदारी भी है। सत्याग्रही लोक-सेवक की संज्ञा के साथ-साथ यह जिम्मेदारी उन पर आ जाती है। फिर सार्वजनिक-जीवन में, यानी समाज-जीवन में मनुष्य के लिए किसी-न-किसी बल की आवश्यकता होती है। संकल्प-पूर्ति के लिए शस्त्र-बल, कानून-बल आदि हैं। लेकिन जिस मनुष्य का लक्ष्य समाज से शस्त्र एवं कानून का निराकरण करना है, उसे समाज-जीवन के कोई-न-कोई बल का निर्देश करना होगा। अहिंसक समाज का बुनियादी बल (सैंक्शन) सत्याग्रह ही है। अतएव अहिंसक समाज का उद्देश्य स्थापन करने वालों के लिए सत्याग्रह का दर्शन तथा स्वरूप निर्धारित करना आवश्यक है। इन तमाम बातों का विचार करने पर आपको स्पष्ट हो जायेगा कि विनोबाजी ने सेवकों के लिए सत्याग्रही-लोकसेवक की संज्ञा क्यों दी है। अगर सेवक के मन में अहंकार पैदा हुआ, तो वह सत्याग्रही रह ही नहीं जायेगा।

कर्नाटक में ग्रामदान-गंगा का अवतरण

(बाबू कामत)

कर्नाटक अब जाग रहा है। ग्रामदान की क्रांतिगंगा आम जनता के अंतरंग तक पहुँची है। सामूहिक पदयात्रा के तंत्र से गणसेवकत्व शुरू हुआ। अब ग्रामदान के मंत्र से जन-आंदोलन का रूप आ रहा है। स्वामित्व-विसर्जन से असीम सर्जन-शक्ति देहात में निर्माण होती है, इसे अंकोल (कर्नाटक) की जनता ने माना।

सन् '३०-'३१ के आंदोलन-काल में अंकोला तालुका के किसानों ने करबंदी (No-tax) करके स्वातंत्र्य-संग्राम की एक अमिट मिसाल पेश की। पश्चिम किनारे पर कारवार जिले का वह हिस्सा है, जहाँ अब तक घर-घर में सर्वस्व-त्याग की अंतर्ज्योति जगमगा रही है। ग्रामदान की बात श्रमिक खेतीहरों के दिल और दिमाग को सीधे पकड़ लेती है।

वैसे तो कर्नाटक भूदान-आंदोलन में पिछड़ा हुआ है। पर पड़ोस के रत्नागिरी जिले ने हमें सचेत किया। उसी सह्याद्री के जंगल में मंगलमय की आराधना के लिए हम निकले। निधि-मुक्ति के साथ हम कन्नडिगों का एक और अहोभाग्य है कि इसी वर्ष विनोबाजी इस प्रदेश में घूमेंगे। दक्षिण से जब वे इधर पधारेंगे, तब उनका सक्रिय स्वागत हो, इस दृष्टि से उत्तर कर्नाटक के २०-२५ कार्यकर्ताओं ने सामूहिक पदयात्रा शुरू की। ११ जनवरी को बेलगाँव के शिविर के लिए श्री गोविन्दराव देशपांडे आये। रत्नागिरी जिले के ७५ ग्रामदानों की प्राप्ति की खबर वे साथ लाये। सब में विद्युत-प्रवेश हुआ। उन्होंने अनुभव की बात कही कि "दिल खोल कर मांगो, तो जनता भर भर कर देती है।" सब पर ग्रामदान की धुन सवार हुई। बेलगांव से पूर्वाभिमुख होकर मैदान की आसान हवा खाने के बनिस्बत सीधे दक्खन की ओर पहाड़ की गोद में हम कूद पड़े। पूर्व-तैयारी के लिए समय ज्यादा न निकाल पाने की वजह से शुरू में हमें कामयाबी हासिल नहीं हुई, लेकिन सब में ग्रामदान की बात से सनसनी फैल गयी। नवयुग के नगाड़े ग्रामदान से घने-जंगलों में बजने लगे।

अंकोला तालुका में गत आठ साल से ४० देहातों में सरकारी सर्वोदय-योजना जारी है। वामनराव होदिकोजी ने काफी जन-संपर्क भी साध लिया है। इस नैष्ठिक ब्रह्मचारी का सादगी भरा जीवन सबके लिए प्रेरक-सा बना। होदिकेजी बेलगाँव में ग्रामदान की बात से बहुत प्रभावित हुए। वे सीधे अपने क्षेत्र में पहुँचे। गाँव-गाँव में ग्रामदान का प्रेम-गान गाकर लोगों को जगाया। उसीके फल-स्वरूप ब्रम्हूर और मणीगद्दे के दो ग्रामदान जाहिर हुए। ता० १२ फरवरी को सामूहिक पदयात्रा अस्थिविसर्जन क्षेत्र मोगटा में पहुँची और छह दिनों में इसी हिस्से में सघन प्रचार हुआ और ४ ग्रामदान मिले। करीब सभी ग्रामों ने इसका सहर्ष स्वागत किया। ता० १९ को फिर जब इकट्ठा हुए, तब दो ग्राम वाले बुलाने आये कि "हमें भी ग्रामदान करना है, चलिये हमारे गाँव," उसी रात को समारंभपूर्वक अपने गाँव में हमें ले गये। मध्य रात के बाद भी बातें होती रहीं। दो के बदले वहाँ चार गाँव तैयार हो गये हैं। ये चारों गाँव सुबुद्ध और जाग्रत हैं। ग्रामवासी आपस में खूब चर्चा करके तैयार हुए हैं। सर्वस्व-त्याग की भावना से सामान्य जनता कितनी ऊँची चढ़ सकती है, इसकी प्रत्यक्ष प्रतीति पग-पग पर आयी और महसूस हुई हमारी त्रुटियाँ और कमजोरी। जनता तो तैयार है, हमें ही उसके लायक बनना है।

अंकोला के ये ग्रामदान सब तरह के हैं। घने जंगल में बसे हुए गाँवों ने श्रद्धापूर्वक ग्रामदान किया, तो समुद्र किनारे के शानी गाँवों ने भी जान-बूझ कर ग्रामदान किया। वर्षारंभ के समय पू० विनोबा को लिखा हुआ निम्न पत्र तो हमसे पहले जनता ने ही समझ लिया !

विनोबा का पत्र :

"....अभी इतना ही समझो कि कर्नाटक के अध्ययन में इस समय मेरा मन लगा है। मदुरा जिले में ओरिसा का अगला कदम पड़ा है। ग्रामराज्य के संकल्प से ग्रामदान मिल रहे हैं। सब जाति के और शिक्षितों से बसे हुए ये गाँव हैं। विचार की ठीक छानबीन करके ये लोग ग्रामदान दे रहे हैं। मैंने यहाँ फिरका-दान माँगा है और कार्यकर्ता उसका इन्कार नहीं करते। अब कर्नाटक कैसे पीछे रहेगा ? वह तो हनुमान का देश है ! जो राम को भी सधा नहीं, उसे हनुमंत ने साध लिया, ऐसी कथा रामायण में है। ऐसी पूर्ण श्रद्धा रख कर मैं कर्नाटक में आने वाला हूँ।

श्रद्धां प्रातर्हवामहे। श्रद्धां मध्यं दीनं परी ॥
श्रद्धां सूर्यस्य निमरुचि। श्रद्धे श्रद्धापयेहनः

—विनोबा

www.vinoba.in

भूदान-यज्ञ

२२ मार्च सन् १९५७

ग्रामदान का अमृत-बींदु !

(वीनोबा)

शुरू में लोग और अर्थ-शास्त्री भी कहने लगे की भूदान में छोटे-छोटे टुकड़े प्राप्त करने से क्या लाभ होगा ? फीर जब हम छठा हीस्सा मांगने लगे, तो लोग कहने लगे, "छठा हीस्सा आप ले लेते हैं, पर शेष पांच हीस्से तो उसके पास ही रहते हैं ! परीणाम-स्वरूप मालकीयत और भी मज़बूत बनेगी ! याने दान मांगने के बावजूद मालकीयत बनी ही रहती है !" फीर ग्रामदान शुरू हुआ, तो कहने लगे, "काम तो अच्छा है, पर यह होगा भी ? कौन पूरा का पूरा गांव दे देगा ? सारी मालकीयत सब कैसे छोड़ेंगे ?"

इस तरह आक्षेपों की कमी नहीं है ! नीष्क्रीयता में आक्षेपों की कमी होती भी नहीं है, क्योंकी उसके कारण दीमाग ज़ोर से चलता है ! इस वास्ते हम आक्षेपों का जवाब नहीं देते !

बच्चे को शुरू में 'अ, आ, क, ख' ही सीखाया जाता है ! यह सब सीखने के बाद ही पुस्तक पढ़ना सीखाया जा सकता है ।

इसी तरह भूदान का ग्रामदान तक वीकास हुआ है ! पहले से ही हमने ग्रामदान की बात छेड़ी होती, तो वह हवा में ही रह जाती ! काम तो लोक-शक्ती के अनुसार ही बढ़ना चाहीए ! जमीन पर कीसी की मालकीयत न हो, ऐसा तो कहा गया था, परंतु जैसे-जैसे लोक-शक्ती बढ़ी, हमने एक-एक क़दम उठाया और ग्रामदान तक पहुंचे । कोरापुट के ग्रामदान की बात सुनकर भी लोगों ने कहा, "आदीवासीयों के गांव थे, इसलीए मीले !" पर अब मदुरा में 'आधुनीक' लोगों ने भी जब ग्रामदान कीये, तब लोग इसका महत्व समझने लगे ! फीर, एकाध ग्रामदान होता है और पास के गांव वैसे ही अछूते रह जाते हैं, तो वह ग्रामदान भी नहीं टीकेगा, यह हमने सोचा और इसलीए अब तालुकादान या फीरकादान की बात हमने शुरू की है !

ऊंचे शब्द कहना आसान होता है, पर वैसा अमल करना कठीन होता है । हींदुस्तान में अभेद की बात कोई कहे, तो यहां तक कह देगा की ईश्वर और मुझमें भेद ही नहीं है ! इस तरह पेड़-पौधे, ईश्वर, पत्थर, आदमी, कीसी में भेद नहीं है, सब एक है, इस कथन से और ऊंची बात क्या हो सकती है ? लेकीन व्यवहार में ब्राह्मण-हरीजन-भेद, पंथों के भेद, भाषा के भेद हैं ही ! पेड़ पर जीतनी पत्तीयां होती हैं, उतनी जातीयां भी हींदुस्तान में मौजूद हैं ! इसके अलावा पक्षभेद तो बढ़ ही रहे हैं ।

इसलीए ऊंचा से ऊंचा शब्द इस देश में प्रगट होते ही आया है ! सवाल है, उसके अनुकरण का ! ग्रामदान द्वारा यही "अभेद भावना" हम गांव-परीवार एक बनाकर साधना चाहते हैं ! यह अमृत-बींदु है, जो सारी दुनीया में शांती-स्थापना कर सकता है !

(सापटूर मदुरै, ७-३-५७)

'रामायण' भगवत्-लीला है, इतिहास नहीं !

[दक्षिण के एक नेता, श्री रामास्वामी नायकर ने रामायण को उत्तर भारतीयों द्वारा दक्षिण पर हुए आक्रमण की कहानी कह कर उस ग्रंथ के जलाने तथा राम की मूर्तियाँ नष्ट करने का एक कार्यक्रम दिया था। उस समय 'रामायण इतिहास नहीं, नीति-कथा है, भगवत्-लीला है, उसमें भक्तों ने समय-समय पर परिवर्तन भी किये हैं और आवश्यकतानुसार आज भी किये जा सकते हैं', इस आशय का भाषण विनोबाजी ने दिया था। प्रेस में उस भाषण* का सारांश यथार्थ न छपने से लोगों में कुछ गलत-फहमियाँ हुई थीं। एक तमिळ शिक्षक भी बहुत दुखी थे। उनके साथ की इस विषय की बातचीत का सार नीचे दिया है। —दामोदरदास मूँदड़ा ।]

तमिळ पंडित—रामायण एक नीति-ग्रंथ है, इतिहास नहीं है, ऐसी आपके भाषण की रिपोर्ट अखबारों में निकली थी। विद्यार्थी लोग उसका हवाला देकर हमें पूछते हैं कि "फिर रामायण पढ़ने की क्या आवश्यकता है ? आप क्यों आग्रह-पूर्वक रामायण पढ़ा रहे हैं, आदि।" जो लोग रामायण-विरोधी हैं, वे भी आपका नाम लेकर अब पहले से भी अधिक विरोध कर रहे हैं। आपके बयान से उन्हें तो और भी बल मिल गया है। ऐसी हालत में उन लोगों की दिक्कत बढ़ जाती है, जो श्रद्धापूर्वक राम को मानते हैं। क्या आप सचमुच मानते हैं कि रामचन्द्र नहीं हुए ?

विनोबा—रामचंद्र के होने में तो कोई अड़चन ही नहीं है। शेक्सपीअर ने जूलियस सीजर नाटक लिखा है। ज्यूलियस सीजर कोई हुआ ही नहीं, ऐसी बात तो नहीं है। पर शेक्सपीअर का वह नाटक उस ज्यूलियस सीजर की कहानी नहीं है। रामचंद्र को होकर आज बीस लाख बरस हो गये। त्रेता के बाद द्वापर आया, और आज कलियुग है। जो इतिहास हमें आज उपलब्ध है, वह केवल पाँच हजार साल का ही है। इतिहास की किताबें सामान्य होती हैं। रामायण कोई सामान्य ग्रंथ नहीं है। इतिहास में शिवाजी की कहानी, अकबर की कहानी होती है। ये कहानियाँ हमें रोज क्यों पढ़नी चाहिए ? रामायण इस प्रकार कोई ऐतिहासिक पुस्तक नहीं है। वह एक धर्म-ग्रंथ है। इसलिए पुनः पुनः पठनीय है, पढ़ना चाहिए भी। अगर वह इतिहास की किताब होती, तो बीस लाख वर्ष पहले का यह इतिहास किसने लिखा होता ? कंबन ने तमिळ में रामायण लिखी, उसे एक हजार बरस हुए। लेकिन क्या हमें स्वयं कंबन का इतिहास भी मालूम है ? इतने बड़े-बड़े चार नाडवार (भक्त) यहाँ हो गये, परंतु कब कौन हुआ, इसमें भी मतभेद हैं। कोई कहता है, वे नौवीं सदी में हुए, कोई चौथी सदी में बताता है। याने एक हजार बरस की घटना में भी पाँच सौ साल का अंतर पड़ गया, तो बीस लाख बरस पहले की वस्तु में कितना अंतर पड़ना चाहिए ?

अगर रामायण इतिहास की कहानी होती, तो सर्वत्र एक जैसी लिखी गयी होती। पर वाल्मीकि की कहानी अलग है, तुलसी की अलग है, कंबन की अलग है। वाल्मीकि ने उत्तर कांड में शंबुक-वध लिखा है। कंबन ने उत्तर-कांड लिखा ही नहीं और वह टी० के० सी० तो कहता है कि यह रामायण पूरी कंबन के हाथ की है ही नहीं ! पर कंबन के नाम पर वह चल रही है। याने इस विषय में भी मतभेद है। इसलिए जहाँ अभिप्राय-भेद होता है, वह पुस्तक इतिहास की कैसे मानें ? तुलसीदास ने तो लिखा है कि राम दुनिया छोड़ कर गये ही नहीं ! तुलसीदास की रामायण में शंबूक-वध है ही नहीं। सीता-वनगमन भी है ही नहीं। तब रामायण को इतिहास की कहानी कैसे कहें ?

प्रश्न : आपने बीस लाख साल का समय तो बता दिया, परंतु क्या वास्तव में इतना काल हुआ ?

विनोबा—यह तो गणित का सवाल है। युगों का परिमाण ज्योतिष के द्वारा निश्चित है। राम की कहानी त्रेता-युग की है। शायद आप ज्योतिष का गणित जानते नहीं। कलियुग आया, उसे ५०५८ (पाँच हजार अट्ठावन) बरस हुए हैं। उसके पहले का द्वापर है, जिसका लाखों बरस का कालमान है। उसके पहले का त्रेता है और उसके भी पहले का सत्ययुग है। आज तो मॉडर्न वॉर का भी पूरा इतिहास मालूम नहीं होता। एक शख्स एक बात लिखता है, दूसरा शख्स दूसरी बात। इस जमाने का यदि यह हाल है, तो रामायण-काल का क्या हाल होगा ? रामायण यदि इतिहास का ग्रंथ होता, तो मैं उसके पठन-पाठन में जरा भी समय नहीं देता। मैं कहना चाहता हूँ कि यहाँ हमारी पदयात्रा में भी रामायण रोज नियमित पढ़ी जाती है। ऋग्वेद मैं पढ़ता हूँ, परंतु वह इतिहास की किताब होती, तो मैं रोज़ नहीं पढ़ता। इतिहास पढ़ते रहने के लिए मैं निकम्मा नहीं हूँ। मुझे इतिहास

---

* यह पूरा भाषण 'भूदानयज्ञ' में ता० १७ अगस्त,५६ के अंक में छपा है। —सं.

www.vinoba.in

बनाना है। राम अंतर्यामी होते हैं। काम-क्रोध आदि रूप रावण धारण करता है। यही उसके दस शीश हैं। इतने बरसों में हमने तो दस सिर का कोई आदमी नहीं देखा, न गिब्बन ने देखा! इसलिए यह कहानी एक आध्यात्मिक रूपक है। तुलसीदास ने यही लिखा है। तुलसीदास की रामायण पंद्रह करोड़ लोग पढ़ते हैं। उत्तर प्रदेश में ऐसा कोई गाँव नहीं, जहाँ रामायण नहीं पढ़ी जाती हो। वहाँ वाल्मीकि नहीं पढ़ा जाता! कंबन को वे लोग जानते नहीं! तुलसीदास ने खुद लिख रखा है कि यह राम तो भगवान् हैं और यह कहानी भक्ति की नीति-कथा है। मैं कहना चाहता हूँ कि रामायण को इतिहास की श्रेणी में रखने से उसका महत्त्व घटता है, बढ़ता नहीं! ये लोग इसे समझते नहीं। इतिहास तो पचासों राजाओं का हो गया। पांड्याओं का हुआ, चोलों का हुआ, राष्ट्रकूटों का हुआ। कौन पढ़ेगा उसे? पर रामायण भगवत्-चरित्र है, भगवत्-लीला है। कंबन ने कहा था कि यह नारायण-विळयाट्टन् (लीला) है। गिब्बन ने 'विळयाट्टन्' नहीं लिखा; 'फॉल ऑफ दी रोमन एंपायर' लिखा! वह घटनाओं का लेखा है, पर यह तो 'विळयाट्टन्' है, इसलिए इसका महत्त्व बढ़ता है और अगर इसे इतिहास समझो, तो महत्त्व घटता है। ऋग्वेद में भी ऋषि आते हैं। लेकिन हमें उन ऋषियों से क्या मतलब? उन्होंने हमें आध्यात्मिक मंत्र दिये हैं। वे उपयोगी हैं। परंतु लिखने वाले वेद में से भी इतिहास का अंश निकाल कर लिखते हैं! रामायण को चरित्र का आधार नहीं, ऐसा नहीं। पर वह राम कौन है? दशरथ ने अपने पुत्र का नाम राम क्यों रखा? हम अपने बच्चे का नाम राम रखें और उसका चरित्र लिखें, तो लोग उसे पढ़ेंगे? उसी तरह राजा दशरथ के पुत्र राम का इतिहास मैं क्यों पढ़ने चला? तो समझना चाहिए कि दशरथ ने अपने पुत्र का नाम जिस राम के पीछे रखा, वह राम परमेश्वरवाचक शब्द है। वह नाम परमेश्वर का है। वेदों में भी वह नाम आता है। राम के पहले परशुराम का जिक्र है। नाम उसका भी राम ही है। वह भी भगवान् का ही नाम है।

तुलसीदास ने तो लिखा है कि रावण असली सीता को ले जा ही नहीं पाया। राम ने सीता को गुप्त कर रखा था और यह तो नकली सीता थी! कोई यह 'मरमु न जाना!'—याने जो मर्म लक्ष्मण को भी मालूम नहीं, वह तुलसीदास को मालूम हो गया! रावण-वध के बाद यह सारा भेद खुला। कंबन में क्या यह सब है?

पंडित—जी नहीं।

विनोबा—मैं जानता हूँ कि नहीं है। अगर रामायण इतिहास की कहानी होती, तो इतिहास को कोई बदल नहीं सकता था। तुलसीदास और कंबन को फिर वैसा ही लिखना पड़ेगा। पर यहाँ तो सभी अलग-अलग प्रकार से लिख रहे हैं। कंबन का कहना है कि रावण सीता को लेकर तो गया, परंतु उसके शरीर को छूए बिना, उसके नीचे की ज़मीन के साथ उसे उठा कर ले गया। अब या तो वाल्मीकि ग़लत है या कंबन गलत है! इतिहास में ऐसा फरक नहीं हुआ करता। तो यह आत्मदेव की कहानी है, भगवान् की लीला है। इसलिए ऋषि-मुनि अपनी-अपनी रुचि के अनुसार चित्रित करते हैं। वाल्मीकि बताते हैं कि राम शबरी के आश्रम में गये, तो शबरी ने चुन-चुन कर उन्हें बेर भेंट किये। मराठी में लिखा है कि शबरी ने स्वयं चख-चख कर राम को बेर भेंट किये। न केवल महाराष्ट्र में यह कहानी है, बल्कि दूसरे प्रांतों में भी यह चलती है। 'जूठे फल शबरी के खाये', ऐसे गीत भक्त वहाँ गाते हैं। पर वाल्मीकी ने ऐसा नहीं कहा है। क्या इतिहास में ऐसा फर्क हो सकता है? इसलिए मैं कहता हूँ कि यह विळयाट्टन हैं, भगवान् की लीला है, किसी व्यक्ति का चरित्र नहीं है।

पंडित—आप इतने व्यापक दृष्टिकोण से सोचते हैं, पर लोग ऐसा नहीं सोचते!

विनोबा—(हँसकर विनोद से) तो बताओ, यहाँ के लोगों को क्या कहने से अच्छा लगेगा?

पंडित—रामायण पढ़ने की जरूरत नहीं, ऐसा भी आपके कथन का अर्थ लोग निकालते हैं!

विनोबा—पर बाबा तो ऐसा नहीं कहता! बाबा कहता है कि राम इतिहास का आदमी होता, तो बाबा उसकी कहानी नहीं पढ़ता—न पढ़ने की सिफारिश करता। राम भगवान् है, इसलिए उसकी कथा पढ़नी चाहिए और इसीलिए बाबा भी रोज उसे पढ़ता है।

पंडित—राम यहाँ दशरथ के राम के रूप में ही मान्य है। हम चाहते हैं कि उस श्रद्धा को धक्का न लगने दें, वह परंपरा कायम रहने दें।

विनोबा—लेकिन हमारे प्रश्न का उत्तर तो आपने दिया ही नहीं कि हमें क्या कहना चाहिए, ताकि आपकी श्रद्धा को धक्का न पहुँचे?

पंडित—वह एक चरित्र है, ऐसा मानना चाहिए।

विनोबा—इतना ही न? तो लो, हम कहेंगे कि रामायण चरित्र है। इससे संतोष है? फिर सोचो, क्या कहूँ? चरित्र है कहूँ या चरित्र नहीं है, ऐसा कहूँ?

पंडित—तत्त्व के साथ मिला हुआ चरित्र है, ऐसा कहें तो? नीति-कथा न कहा जाय, ऐसा मैं चाहता हूँ।

विनोबा—नीति-कथा याने क्या? नीति का अर्थ साधारण लोग समझते, वैसा मैं नहीं करता। मैं तो भगवत्-लीला के अर्थ में उस शब्द का प्रयोग कर रहा हूँ। लेकिन ठीक है। जो रामायण को चरित्र समझकर पढ़ना चाहेंगे, उन्हें हम कहेंगे कि यह चरित्र है। जो उसे भगवत्-लीला समझ कर पढ़ना चाहेंगे, उन्हें वैसा कहेंगे,

पंडित—तमिल पढ़ाने वाले लोगों की तकलीफ यह है कि नीतिकथा कहने से उनका बल घट जाता है।

विनोबा—आपका बल तो बढ़ना चाहिए! हमें रामायण के बारे में अपने विचार प्रगट क्यों करने पड़े, यह आपको भूलना नहीं चाहिए! आपके यहाँ एक आंदोलन चला कि रामायण उत्तर भारत के उस राम का इतिहास है, जिसने उत्तर से दक्षिण पर आक्रमण किया है! उन लोगों से हम कहते हैं कि रामायण इतिहास नहीं है, इसलिए उसे पढ़ो!

पंडित—लोगों को जवाब तो मैं देता ही हूँ, परंतु जब वे आपका नाम लेकर रामायण न पढ़ने की बात करते हैं, तब मेरे सामने संकट खड़ा हो जाता है।

विनोबा—उन्हें आप कहें कि बाबा तो रोज़ रामायण पढ़ता है!

बिहार के भू-दान-कार्यकर्ताओं को आवश्यक सूचनाएँ

(वैद्यनाथ प्रसाद चौधरी)

गत दिसम्बर के अन्तिम सप्ताह में खादीग्राम में हुए बिहार-भूदान-कार्यकर्ताओं के सम्मेलन के निश्चयानुसार १८ अप्रैल '५७ तक भूदान-यज्ञ में प्राप्त हुई कुल भूमि का बँटवारा जन-आधारित पद्धति के अनुसार पूरा करना है। इस महान् कार्य को सम्पन्न करने के लिए कुछ जरूरी सूचनाएँ नीचे दी जा रही हैं:

(१) '५७ की भूक्रान्ति का आवाहन नामक पुस्तिका प्रकाशित की गयी है। "भूदान-यज्ञ" में भी एक लेख १५ फरवरी को छपा है। तदनुसार कार्य करना है।

(२) प्रत्येक सबडिविज़न में एक शिविर की व्यवस्था की जा रही है, जिसमें कार्यकर्ताओं को सभी आवश्यक जानकारी दी जा सकेगी। स्नेह-सहित सबसे अनुरोध है कि उस शिविर में कार्यकर्ता स्वयं तो शरीक हों ही, साथ में भूदान-कार्य में सहानुभूति रखने वाले अन्य कार्यकर्ताओं, दाताओं, राजनीतिक पक्षों के कर्मियों, ग्रामपंचायतों और सहयोग-समितियों के सदस्यों आदि को भी आमंत्रित करें।

(३) भू-वितरण-संबंधी नियमों का पालन किया जाना जरूरी है।

(४) भू-वितरण-कार्य को आगामी १८ अप्रैल तक पूरा करने के लिए कार्यकर्ता एक या अधिक गाँवों की जवाबदेही लेवें। तत्संबंधी गाँव के दाताओं की दानपत्र-सूची अपने सबडिविज़नल शिविर में वे पा सकेंगे। जाँच के बाद वितरण के लिए उपलब्ध हुई हर गाँव की कुल भूमि का खसरा वितरण-फार्म नं० २ पर तैयार किया जाय। गाँव की भूमिहीन परिवार-सूची फार्म नं० ३ पर तैयार करने की कोई विशेष आवश्यकता नहीं है। फार्म नं० ४ की वितरण-सूची गाँव की वितरण-सभा में तैयार हो। फार्म नं० २ और ४ की प्रतियाँ शिविर में हैं। वितरण-सभा के पश्चात् दानपत्र-सूची, फार्म नं० २ (खसरा) और फार्म नं० ४ (वितरण-सूची) को कृपया जिला भूदान-कार्यालय में भिजवा देने की कृपा करें, जिससे भूमिहीनों को दिये जाने के लिए प्रमाणपत्र जिला-कार्यालय से तैयार कर जल्द भेजे जा सकें।

(५) जो दाता अपने दान की भूमि का विवरण आपके माँगने के बाद भी आपको न दें, उनके दान की भूमि का बँटवारा दाताओं के नाम से जारी किये गये "भूदाताओं से नम्रनिवेदन" नामक सूचनापत्र के अनुसार हो। उस पत्रक की प्रति शिविरों में रहेगी। उसे ऐसे दाताओं को जरूर पढ़ा दें।

(६) जिस गाँव के भूदान की भूमि के वितरण की जवाबदेही कार्यकर्ता ने ली है, यदि वहाँ सरकार की कोई गैरमजरूआ जमीन परती हो, जो खेती लायक पायी जाय और अब तक किसी दूसरे व्यक्ति के साथ उसकी बन्दोबस्ती नहीं हुई हो, तो उसे गाँव के भूमिहीनों में बँटवा देने की व्यवस्था गाँव की वितरण-सभा के द्वारा आप करें। बिहार सरकार के राजस्व-मंत्री महोदय ने यह आश्वासन दिया है कि भूदान-कमिटी यदि किसी गाँव में भूदान की भूमि के साथ गैरमजरूआ परती जमीन का वितरण भूमिहीनों में करेगी, तो उसे सरकारी मान्यता प्रदान की जायगी।

(७) वितरण-संबंधी अपने कार्य की रिपोर्ट नियमित समय पर अपने जिला या क्षेत्र के निवेदक अर्थात् प्रधान भूदान-कार्यकर्ता को और जिला-मंत्री को भेजें।

www.vinoba.in

भूदान-आंदोलन की असली ताकत कौनसी है?

(विनोबा)

कई महीनों से ग्रामदान-फिरका-दान की हवा चली है। अब इलेक्शन खतम हो गये हैं, तो बहुत से लोग भूदान के काम में जुट जायेंगे। पर इस काम की सच्ची शक्ति क्या है ? इसके पीछे क्या ताकत है, जिससे कि यह काम हो रहा है ? मान लीजिये कि हमें सैकड़ों कार्यकर्ता मिलते हैं। वैसे, हमने तो सब भूदान-समितियाँ तोड़ दी हैं और यह काम जनता के ऊपर छोड़ दिया है। लेकिन तब से कार्यकर्ताओं की संख्या बढ़ी है, वह घटी नहीं है। सैकड़ों कार्यकर्ता इस काम में लगे हैं और आगे हजारों लगेंगे। पर क्या कार्यकर्ताओं की संख्या बढ़ेगी, तो हमारी ताकत बढ़ेगी ? कोई व्यापक कार्य करना हो और थोड़े समय में करना होता है, तो कार्यकर्ताओं की जरूरत होती है। परन्तु भूदान-आन्दोलन के काम के पीछे जो बल है, वह कार्यकर्ताओं की संख्या का नहीं है, उसके मूल में दो शक्तियाँ काम कर रही हैं।

एक तो यह है कि यह विचार अत्यन्त सत्य है, याने इसमें विचार का दोष नहीं है, कोई मिथ्यत्व का अंश मिला हुआ नहीं है। यह शुद्ध सत्य है। इसमें कोई शक नहीं हो सकता कि जमीन की मालकियत मनुष्य की नहीं हो सकती। जब तक यह मालकियत बनी रहेगी, तब तक दुनिया में शान्ति नहीं होगी और विज्ञान के जमाने में अगर लोग अलग-अलग रहेंगे, तो भी वे टिक नहीं सकते। उनको मिल-जुल कर काम करना ही होगा। इसमें भी कोई शक नहीं कि जमीन के साथ मालकियत का सम्बन्ध आत्मज्ञान के विरुद्ध है। आत्मा तो शरीर की भी मालकियत नहीं चाहता है। खैर, शरीर की आसक्ति तो टूटना मुश्किल है, पर यह जमीन की मालकियत क्या है ? वह तो टूटनी ही चाहिए, यह आत्मज्ञान कहेगा। इसमें भी कोई शक नहीं कि ग्रामदान से जमीन की फसल बढ़ने में मदद होगी। यह कुल मिला कर पूर्ण सत्य होगा। तो ग्रामदान के पीछे यही बल है कि यह विचार सत्य विचार ही है।

दूसरा बल है, प्रेम की शक्ति। कभी-कभी ऐसा होता है कि सत्य-कार्य भी द्वेष से, हिंसा से या बलात्कार से किया जाता है। वह अधर्म है। तो इसके पीछे की दूसरी ताकत है प्रेम। सब लोग मिल कर विचार करेंगे। एक-दूसरे की आसक्तियाँ देख कर एक-दूसरों की निंदा नहीं करेंगे। ये आसक्तियाँ कैसे छोड़ सकते हैं, इस पर सब मिल कर चर्चा करेंगे। यह मार्ग तो सत्य है. पर इस पर अमल कैसे किया जाय, इस पर विचार करेंगे। अगर इस प्रेम में कुछ कमी रही, तो चाहे सत्य का बल पूरा हो, तो भी काम नहीं होगा, बल्कि उस सत्य में ही कमी आयेगी। इसलिए हमारा व्यवहार अत्यंत प्रेममय होना चाहिए। तालुका-दान छोटी चीज नहीं है। अब हवा तैयार हुई है और जमाने की हवा भी बनी है, यह ठीक है, परंतु सबको इकट्ठा होना होगा, मिल-जुल कर काम करना होगा। तो लोगों को विचार समझाना और ग्रामदान माँगना प्रेम से ही हो सकता है।

पर ग्रामदान-प्राप्ति के साथ ग्राम-राज्य बनाना बड़ी बात है। कार्यकर्ताओं को अपने विचार का अधिक आग्रह नहीं रखना होगा। किस तरह ग्रामराज्य का रूप होगा, इस पर चर्चा चले, तो हमारे ही बीच मतभेद हो जाते हैं। हम जो सर्वोदय-कार्यकर्ता कहलाये जाते हैं, उनमें भी विचार-भेद होगा। आपस में चर्चा करेंगे, तो परस्पर के विचार परस्पर समझेंगे याने विचार की लेन-देन होगी। इस तरह विचार की लेन-देन करके प्रेम से मार्ग निकालना चाहिए। फिर भी दोनों के बीच भेद रहा, तो एक कार्यकर्ता एक गाँव लेकर वहाँ अपने विचार के अनुकूल काम करेगा और दूसरा दूसरे गाँव में अपने विचार के अनुकूल काम करेगा। इस काम के लिए कहीं हमने सर्वोदय-मंडल बनाये हैं। ये अधिकार, सत्ता चलाने वाले मंडल नहीं हैं। ये 'तोंडु मंडलम्' (सेवा-मंडल) है। ये लोग विचार-विनिमय करके लोगों को नैतिक सलाह देंगे। भिन्न-भिन्न संस्थाओं के लोग और कार्यकर्ता इनसे सलाह लेकर अपनी पूरी अकल से काम करेंगे। तो उस संस्था के लोगों में अत्यंत प्रेम होना चाहिए। दुनिया में आज यह बहुत कठिन मालूम होता है। विचार-भेद तो होते ही हैं। विचार-भेद न हो, तो बड़ा कार्य हो ही नहीं सकता। पर विचार-भेद होते हुए भी मिल कर काम करना बड़ी कठिन बात है। पर यह नहीं होगा, तो अहिंसा पनपेगी नहीं। हिंसा ही रहेगी।

दूसरी बात यह है कि कार्यकर्ता सर्व दोषरहित तो होते नहीं, बल्कि उनमें बहुत दोष होते हैं। इस वास्ते उनकी तरफ क्षमाशील वृत्ति से देखना मुश्किल होता है। पर हम अपनी तरफ कैसे देखते हैं ? हममें कितने दोष पड़े हैं, तो भी क्षमा करते ही चले जाते हैं। कितनी गलतियाँ हम करते रहते हैं ? एक बार हम अपने को क्षमा न करें, तो चलेगा; परंतु दूसरों की तरफ क्षमाशील वृत्ति से ही देखना है।

तीसरी बात यह है कि हम एक-दूसरों के उद्देश्यों के बारे में, हेतु के बारे में भी कल्पना या शंका करते हैं। वह जो बोला, वैसा क्यों बोला, उसके पीछे उसका क्या हेतु है, इस पर सोचते रहते हैं, गलत कल्पना करते हैं और पीछे अंदाजा करते हैं। यह सारा ही गलत है। हमारी सद्भावना न रही, तो अहिंसा क्या रहेगी ?

इसलिए : (१) विचार-भेद मान्य करते हुए उनका गौरव करना चाहिए। (२) दूसरों के दोष सहन करना चाहिए। उसके लिए क्षमाशील वृत्ति चाहिए। (३) उद्देश्यों पर शंका या भिन्न-भिन्न कल्पना कभी नहीं करनी चाहिए।

ये तीन बातें समझ जायेंगे, तो कुछ साधारण कार्यकर्ता मिलजुल कर काम कर सकते हैं। जहाँ ग्रामदान होगा, वहाँ एक सुन्दर ग्रामराज्य का चित्र भी तयार हो जायेगा। माणिक्यवाचकर ने कहा है : "कलुन्दु वालूम आरु अरिया।" माणिक्यवाचकर भगवान् से प्रार्थना करता है कि मिलजुल कर काम करने का रास्ता मुझे मालूम नहीं है। वह शक्ति मुझे दो।'

हम ही मिलजुल कर काम नहीं करेंगे, तो ग्रामदान क्या समझायेंगे ? क्या काम कर सकेंगे ? इसलिए यह बहुत बड़ी बात है कि कार्यकर्ता मिलजुल कर काम करें। यह यदि सध जाय, तो इस कार्य के पीछे प्रेम का बल कायम होगा। सत्य तो है ही। सत्य के साथ प्रेम हो जाय, तो दोनों मिल कर कितनी बड़ी शक्ति होगी ! जैसे हैड्रोजन और ऑक्सीजन मिल कर पानी होता ही है, वैसे ये दोनों-सत्य और प्रेम एक हो जाते हैं, तो यह काम कामयाब होना ही चाहिए।

भगवान् से मैं प्रार्थना करता हूँ कि सबके साथ मिलजुल कर काम करने की वृत्ति हमको सधे।

(सापट्टूर, मदुराई, ७-३-'५७)

'भाई के वास्ते भूखी रह जाऊँ, भाई कनेसू पिसा न माँगु।'

पुण्यराश गाँव में हमारे भूदान-नारों ने एवं गीतों ने लोगों को आकर्षित किया। मंदिर के पास के चौराहे पर जाजम बिछायी गयी। हम सब साथियों की ओर से श्री केसरपुरीजी ने पैदल-यात्रियों का परिचय करवाया और भूदान-विषयक कुछ बातें संक्षेप में, जमा हुए, धुनी तापने बैठे भाइयों को समझायीं। बहनें सुबह से अपने नित्य-कर्म में व्यस्त थीं, लेकिन आतीं-जातीं जरा-सी खड़ी रह कर नयी बात सुन भी लेती थीं।

श्री पुरीजी का परिचय-भाषण खतम होने पर हम जहाँ चौराहे पर बैठे थे, वहाँ एक बहन आयी। तत्काल उसने प्रश्न किया, "क्या हमने जिस जमीन के तीन-तीन हजार रुपये खर्च किये हैं, वह हम वैसी ही दे दें ? ऐसा कभी हो सकता है ?"

प्रश्न स्वाभाविक ही था और साधारणतया ऐसे ही प्रश्न हम सब संग्रह करने वालों के दिल में उठता है।

"बहन ! अगर तेरा भाई भूखा घर में आता है, तूने तेरे लिए ही रोटी बनायी है, तेरे पास और आटा नहीं है, तो ऐसी हालत में तू क्या करेगी ? क्या तू अकेली ही भोजन करेगी या तेरे भाई को भी रोटी खिलायेगी ? क्या तू तेरे उस अतिथि-भाई से रोटी का पैसा माँगेगी ? क्या तू उस समय कहेगी कि नाज तो मोल लायी हूँ, तुझे कैसे खिला दूँ ?"

"भाई से पैसा कैसे माँगा जायगा ? वह तो मेरा भाई है, इसलिए मैं भूखी रह कर भी उसे खिलाऊँगी ?"

"तो, अब बात इतनी ही रह जाती है कि तू तेरे भाई को रोटी खिलाने के लिए भूखी रह जायगी, तो क्या तू तेरे उस भाई को रोटी कमाने के मुख्य साधन—जमीन देते समय रुपया माँगेगी ?"

"पर वह तो मेरा सगा भाई है न ? सगे भाई से पैसे नहीं लिये जायेंगे..."

हमारा यह बोधपूर्ण सारगर्भित वार्तालाप चल रहा था, इतने में ही धूनी तापने वाले एक पटेल ने इस बहन को डाँटा, "अब जा, जा, घर का काम कर, तू कांई बात करबा उभी है। तू इन बातों में काई समजे !"

—गोकुलभाई भट्ट

---

www.vinoba.in

ब्रजभूमि में पदयात्रा

(पूर्णचन्द्र जैन)

एक भाई प्रेमपूर्वक भोजन करा रहा था। बात भी चल रही थी।

एकाएक उसने सवाल किया, "मेरे पास जमीन कम है। पास के गाँव के कांकड़ में जमीन मिल रही है। लूँ या नहीं?"

सवाल होशियारी का था, क्योंकि प्रसंग यह चल चुका था कि जमीन की मिल्कियत गाँव-समाज की होनी चाहिए, व्यक्ति की नहीं। उस भाई ने सोचा कि जमीन गाँव-समाज की होने वाली है, तब वह और जमीन ले या नहीं?

मैंने उसे तीन बातें कहीं: "जब तक गाँव के सब भाई जमीन की अपनी-अपनी मालिकियत छोड़ कर गाँव-समाज की मालिकी नहीं कायम कर लेते, तब तक भी तुम्हें, और हर भाई को ही, तीन बातें तो सोचनी ही चाहिए। पहली यह कि गाँव में खेती का धंधा करने वाला कोई भाई बेजमीन तो नहीं है? यदि हो, तो अपनी-अपनी जमीन का थोड़ा-थोड़ा हिस्सा देकर भी अपने उस भाई को अपने बराबर ले आना चाहिए। दूसरी यह कि तुम्हारे जमीन कम पड़ती है, तब भी यह देखना चाहिए कि दूसरे भाइयों की जरूरत के मुकाबले में तो तुम्हारे पास ज्यादा नहीं है? तीसरे यह कि दूसरे गाँव के कांकड़ की जमीन लेने के पहले यह देख-जान लो कि उस गाँव में कोई भाई बेजमीन या कम जमीनवाला तो नहीं है? उस भाई को बात जँची और उसने दोहराया कि अपने या पड़ोस के गाँव में हमारा कोई भाई बेजमीन या बहुत कम जमीनवाला होगा, तो वह और जमीन नहीं लेगा, बल्कि पहले उन भाइयों को दिलाने की कोशिश करेगा।

हमारे एक साथी वैद्य प्रभुदयालजी एक बहिन के घर भोजन करने गये। भोजन कराते-कराते वह बोली, "मेरी जमीन रहेगी या नहीं? मेरा लड़का दूसरे गाँव में पढ़ाता है।"

वैद्यजी ने पूछा, "लड़का पढ़ाता है, तो खेती कौन करता है?"

बहिन ने कहा, "आधोली (आधे हिस्से) पर कराती हूँ।"

वैद्यजी ने कहा, "बहिन, तब आधी जमीन तो आज भी तुम्हारे पास नहीं के बराबर है। फिर पूरी ही अपने बेजमीन किसी भाई को दान देकर इस चिंता से छुटकारा क्यों नहीं पा लेती?"

बहिन ने मंजूर किया कि यह तो होना ही है, पर मोह छूटता नहीं। और थोड़े रुक कर उसने स्वयं ही फिर कहा—"मैं अपने लड़के से बात करूँगी। हम तो कमाते-खाते ही हैं। किसी बेजमीन किसान को जमीन मिलेगी, तो उसकी परवशता मिटेगी।"

भरतपुर तहसील के गाँवों में जाने का पहला मौका था। भरतपुर, डीग, पहाड़ी, कामा वगैरह नगर व कस्बों में तो जाना हुआ था, पर गाँवों में नहीं जा पाया था और उस क्षेत्र की सप्ताह भर की पदयात्रा भी यह पहली थी। पूरी गृहस्थीवाले, किन्तु फक्कड़ और अपनी धुन के पक्के साथी वैद्य प्रभुदयालजी, डीग के खादी कार्यकर्ता श्री कृष्णचंद मिश्र, भरतपुर क्षेत्र के ही निवासी खादी-ग्रामोद्योग-विद्यालय, शिवदासपुरा के छात्र श्री नत्थीलाल और मैं, इन चारों सवारों की हमारी टोली थी।

वैद्यजी योजना और पूर्व-तैयारी में कुछ अधिक विश्वास नहीं करते। जिन व्यक्तियों के जिम्मे कार्य छोड़ा जाता, उनकी जिम्मेवारी वे पूरी नहीं निभाते। इसलिए भी जितना हो सके, अपने ऊपर ही कार्य का भार लिए वे अथक, अडिग प्रसन्न-मन काम में लगे रहते हैं। यह उनकी विशेषता है। फलतः अव्यवस्थित व्यवस्था या व्यवस्थित अव्यवस्था के रूप में उनका सब काम होता है। सर्दी का मौसम और पहनने के साथ ओढ़ने-बिछाने के कपड़ों की अधिकता के बावजूद साहित्य, चरखा वगैरह सामान के लिए भी वाहन का या और कोई इन्तजाम हमने नहीं किया था। सब अपना-अपना सामान लेकर हम लोग चल पड़े एवं ३५ मील की पदयात्रा के बाद फिर गांधी-मेले के लिए वापस भरतपुर पहुँचे।

बच्चों द्वारा भूदान का ढिंढोरा

भरतपुर ब्रज-भूमि ही है। ब्रज की माधुरी वहाँ की भाषा, वहाँ के रहन-सहन, बोल-चाल, सबमें पग-पग पर दिखायी देती और अनुभव होती है। लेकिन गावों की, स्त्री-पुरुषों की, बच्चे-बच्चियों की हालत बड़ी गरीब और दयार्द्र करने वाली है। गेहूँ-जौ के लहलहाते खेत, सरसों और अरहर के, जितनी दूर तक नजर जाये, उतनी दूर तक फैले हलके-गहरे बसंती रंग के फूल, गन्ने की जहाँ-तहाँ बाड़ें और चने के थोड़े ऊँचे उठे पौधे सब तरफ हरियाली और धरती का वैभव प्रदर्शित कर रहे थे। फिर भी गाँव का जन-जन न तन से स्वस्थ दीखता था और न मन में उमंग भरा। लोग राजनैतिक दलों की टोलियों से, खास तौर से चुनाव के दिनों में, काफी परेशान हो गये दीखते थे। हमारी टोली को देख कर भी लोग पहले तो यही सोच लेते और कहीं-कहीं तो कह भी देते कि "वोटन" (ब्रज भाषा में वोट का बहुवचन) के लिए आये हैं। बाद में भ्रम दूर होता, लोग नजदीक आते, दिल खोलते और प्रेम उँड़ेल देते थे। वैद्यजी को कई गाँवों में लोग जान गये थे, क्योंकि जहाँ वे एक बार गये, वहाँ चूल्हा, चक्की या किसी प्रसंग से लोगों के घरों में ही नहीं घुसते, बल्कि अपने सीधे, सच्चे, बेलाग व्यवहार और सेवा-कार्य के जरिये मर्द-औरत, बूढ़े-बच्चे सब के दिलों में भी घुस बैठते थे। उन्हें देखते ही जहाँ जाते, वहाँ लोग "बंडीवाला बाबा," "चक्कीवाला बाबा," "चरखेवाला बाबा," कह कर उनका अभिवादन करते। बालकगण तो "नहीं वह तेरा, नहीं यह मेरा, ईश्वर का यह राज है" के गाने में प्रेम से मस्त साथ हो जाते और "धन और धरती, बँट कर रहेगी" का नारा गुँजा कर बिना कहे ही स्वतः भूदान का ढिंढोरा पीट देते थे।

गाँवों में संपर्क साधने का चरखा एक अपूर्व आकर्षक साधन है। सामूहिक प्रार्थना के साथ कताई करने बैठें या यों ही विश्राम के समय चरखा लेकर बैठ जायँ, स्त्री-पुरुष, बालक-बूढ़े पहले मूक जिज्ञासा, फिर प्रश्नों की बौछार और आखिर में खुद अपने हाथों कातने व प्रयोग करने की माँग व आग्रह के साथ घेर कर खड़े हो जाते थे।

श्रम की कसौटी : 'शोष-गड्ढे'

इस प्रकार वैद्यजी ने शोष-गड्ढे (Soak-Pit) बनाने के रूप में गाँववालों से संपर्क करने, उनसे सच्चा श्रमदान कराने और उन्हें क्रियाशील बनाने का अच्छा रास्ता निकाल लिया है। शोष-गड्ढा गाँव की गलियों के कीचड़-गंदगी को दूर करने का एक अच्छा उपाय है और आज की पंचायतों के पंच-सरपंचों में सेवा-भावना व स्वयं श्रम करने की वृत्ति कितनी क्या है, उसकी पहचान भी अच्छी तरह करा देता है। पहले तो जिनके घर के बाहर की गंदगी को दूर करने के लिए शोष-गड्ढा खोदना हम लोग चाहते, वे भी फाँवड़ा व ईंट-पत्थर के टुकड़े उपलब्ध करने तक में झिझकते तथा स्वयं श्रम करने को तो बहुत देर से तैयार होते। पर बाद में घरवाले व पास-पड़ोस के लोग मदद करने आ जाते, स्वयं गड्ढा खोदने में मदद देते, नाली का गंदा पानी व कीचड़ साफ करते।

चरखे को सहायक उद्योग की दृष्टि से तथा चक्की और शोष-गड्ढे को श्रम के महत्त्व तथा सफाई-स्वच्छता के कार्यक्रम की दृष्टि से प्रचारित करना बड़ा उपयोगी है। जन-संपर्क और घरों में प्रवेश के साधन तो ये हैं ही।

खाओ, उतना पकाओ : पहनो उतना तो कातो

चरखे के संबंध की एक बातचीत बड़ी दिलचस्प और उद्बोधक है :

एक बहिन ने पूछा, "चरखा कितना कातते हो?"

हमारे साथी ने कहा, "रोटी कितनी पकाती हो?"

बहिन ने कहा, "मैं खा सकूँ उतनी या घर में जितने हैं, उनके लायक"

साथी ने कहा, "चरखा भी कम-से-कम उतना तो चलाओ कि तुम्हारे लायक और फिर परिवारवालों के लायक कपड़ा बन जाय। इससे अधिक चलाओगी तो बचे हुए वक्त का उपयोग होगा तथा घर की आय कुछ बढ़ेगी ही।"

बहिन का चेहरा खिल उठा, मानो नई प्रकाश-किरण मिली हो।

साँप, बीन और विष-पोटली!

वैद्यजी का गाँववालों से या किन्हीं के भी बीच घुलमिल जाने का मंत्र है—(१) "करने के लिए कहो मत, स्वयं करने लग जाओ। किसी भी घर में जाकर चक्की स्वयं चलाने लगो, घरवाले भी चलायेंगे और दूसरों को भी कहेंगे। गड्ढा खोदना शुरू कर दो, दूसरे भी आ जुटेंगे" और (२) "बीन बजती है, तो साँप भी मुग्ध होकर पास आ जाता है। फिर उसकी ठुड्डी पकड़ कर जहर की पोटली निकाली जा सकती है। इसी प्रकार मीठी वाणी से विषमता, आलस, भेदभाव दूर करना है।" अर्थात् मीठी वाणी और प्रत्यक्ष सेवा दिल को खींचने और दिल में घुसने का सच्चा, सरस और सीधा तरीका है।

...१९५७ तक प्रेम और विचार की इस क्रांति के प्रथम चरण, याने भूमिहीनता मिटाने के कार्य-को पूरा करना है। जब तक गाँव-गाँव में भूमि का बँटवारा नहीं हो जाता, तब तक भू-क्रांति का प्रथम चरण पूरा हुआ, ऐसा हम नहीं कह सकते। अभी सन् '५७ के १० मास बाकी हैं, अगर देश की पूरी शक्ति लग जाय, तो इतना समय कम नहीं है। —विनोबा

www.vinoba.in

तमिलनाड़ की भूदान-यज्ञ-वार्ता

(मीरा व्यास)

इन दिनों विनोबाजी ने पदयात्रा के दो-तीन नियम बना दिये हैं । साढ़े आठ बजे मुकाम पर पहुँचना, दस मील से कम और बारह मील से ज्यादा फासला न हो और जहाँ लोग शांति से बैठे हुए हों, वहीं ग्रामवासियों को दो शब्द कहना। परिणाम-स्वरूप दर्शनाकांक्षी की दर्शन-तृषा वाणी-प्रसाद प्राप्त करने की इच्छा में परिवर्तित हो जाती है और यह नियम सुनते ही सब लोग विनोबाजी के आ प हुँचने के पहले ही बैठ जाते हैं । नारियाँ दीपक-जड़ित पूर्ण कुम्भ से बाबा का स्वागत करती हैं । बाबा चारों ओर जलाये हुए दीपकों का रहस्य समझाते हैं—"यह तो आपका "वेदारण्यम् विलक्कु" (वेदारण्यम् दीपक, जो तमिलनाड में सर्वश्रेष्ठ दीपक माना जाता है) है । 'विलक्कु' याने बाहर देना (वेलिये = बाहर) । आप सबके हृदय में ऐसी ही एक-एक ज्योति जलती है । जैसे सूर्य और दीपक अपना प्रकाश देते रहते हैं, वैसे आपको भी दिल खोल कर देते ही रहना चाहिए। किसीके दिल में अंधकार नहीं चाहिए, अगर दिल का दरवाजा बंद रहा, तो अंधकार फैल जायगा।" सूत का हार स्वीकारते हुए कहते हैं—"यह तंतु सूत का नहीं, प्रेम का तंतु है, ग्रामदान से हम प्रेम करने की रीति बता रहे हैं, हम चाहते हैं कि इस प्रेम-तंतु से आप बँध जायँ।"

मेलूर तालुके का ११० कुटुम्बों का ओडुगमपट्टी नाम का छोटा-सा गाँव ! कुल ६०० एकड़ जमीन ! सबसे ज्यादा जमीन जिनके पास थी, वे भाई कई दिनों से विनोबा और ग्रामदान की बात सुन रहे थे। "मेरा गाँव भी ग्रामदान होना चाहिए," इसकी लगन उनके दिल में लगी थी, परंतु उनके पुत्र को यह मंजूर नहीं था। गाँव के बाकी के भू-मालिकों ने ग्रामदान-पत्र पर हस्ताक्षर भी दे दिये थे। परंतु लड़के के इन्कार ने पिता को बेजबान कर दिया था। उसी गाँव से विनोबाजी गुजरे। पिता ने विनोबाजी को "रिक्तहस्तेन" बिदा होते हुए देखा। उस दिन उन्होंने मन में तय कर लिया कि अपने गाँव का ग्रामदान मैं करके रहूँगा। शाम को भूदान-कार्यकर्ता फिर से वहाँ पहुँचे। लड़के को समझाने की निष्फल कोशिश की। उस वृद्ध पिता की माताजी भी पौत्र के पक्ष में थीं। माता-पुत्र, दोनों के खिलाफ जाकर उस भाई ने सभा में ग्रामदान घोषित कर दिया। यह सुनते ही लड़का दौड़ते हुए बुढ़िया के पास पहुँचा और उसे समाचार सुनाया। सुनते ही वह पागल-सी दौड़ती आयी। आँखों के आँसू गालों को धो रहे थे। आते ही पुत्र को रोते-रोते डाँटने लगी कि "अरे ! तुमने यह क्या किया रे ! तेरे बाप-दादाओं ने कितनी ज़हमत उठा करके जमीन इकट्ठी की होगी। तुम उसको ऐसे ही क्यों दे देते हो ? तुम हमारा जीवन बर्बाद करना चाहते हो क्या ?" माँ ने खूब सुनाया। उसको बीच में ही रोक कर वृद्ध पुत्र ने माँ को ग्रामदान की महिमा समझायी, माँ के चरणों में लेट गया और फिर दिल की करुणा वाक्धारा के रूप में बही—"माँ, मुझे इस पवित्र कार्य के करने से मत रोको ! यह करुणा का कार्य है, धर्म का कार्य है। उससे न मेरा नुकसान होगा, न तेरा नुकसान होगा, न हमारे बाप-दादाओं का नुकसान होगा; बल्कि इस दान से तो वे सारे सुखी होंगे। माँ, कृपया तुम मना मत करो।" दिङ्मूढ़-सी खड़ी हुई माँ सिसकते हुए पुत्र को दो-चार क्षणों के लिए देखती रही और फिर लड़के को उठा कर गले लगा लिया। सुनाने वालों ने हमें सुनाया कि ८० साल की बूढ़ी माँ और ६० साल के वृद्ध पुत्र का वह स्नेहालिंगन देख कर हम आँसू को रोक न सके। माँ-पुत्र, दोनों की आँखों में से आँसू बहते थे। माता के मुँह में से बार-बार यही शब्द निकलते थे कि "बेटा, तुम दान दे सकते हो, तुम दान दे सकते हो।" करुणा ने माँ के दिल को जीत लिया था, माँ की सहर्ष स्वीकृति मिल चुकी थी, परंतु लड़का अभी हिला नहीं था।

लड़के ने पिता को पागल साबित करने की, डाँट-धमकी देने की बहुत कोशिश की, परंतु जैसा लड़का अडिग था, वैसा ही बाप दृढ़निश्चयी था। दूसरे दिन सुबह आकर बाप ने जाहिर किया कि "हमारा गाँव ग्रामदानी हो चुका है।" वे भाई ग्रामदान हासिल करने में भी खूब मदद दे रहे हैं। जहाँ भूदान-कार्यकर्ता ज्यादा आग्रह करने से हिचकिचाते हैं, तो बीच में वे ही कूद कर कहते हैं कि "भाई, धर्म-विचार में इतना क्यों सोचते हो ? दे दो ग्रामदान !"

कुछ दिन पहले त्याग की महिमा समझाते हुए विनोबाजी ने एक कहानी सुनायी थी : "एक ब्राह्मण को नर्मदा नदी की प्रदक्षिणा करने की इच्छा हुई। कुल मिला कर करीब ९०० मील का अंतर था। उसने सुना था कि त्याग करने पर नर्मदा नदी जो चाहे, वह देती है, इसलिए अपने पास जो कुछ था, वह सब छोड़ कर सिर्फ दस-बीस रुपया लेकर वह निकला। रोज कुछ-न-कुछ खर्च होता ही था। आखिर जब एक ही रुपया बचा, तब उसने अपने मन में सोचा कि अरे ! नर्मदा माता तो अभी तक कुछ मदद नहीं दे रही है, क्या बात है ? वह बड़ा चिंतामग्न रहा। रात में नर्मदा देवी स्वप्न में आयी और कहने लगी कि अपना सर्वस्व-त्याग करने वालों को मैं मदद करती हूँ। तुम अपना आखिरी रुपया पानी में फेंक दो, बाद में मैं देख लूँगी। सुबह उठते ही ब्राह्मण ने नदी में बचा हुआ आखिरी रुपया फेंक दिया और चल दिया। रास्ते में कुछ लोग उसी दिशा में जा रहे थे। ब्राह्मण ने पूछा कि आप कहाँ जाते हैं ? उन्होंने कहा, हम मंदसौर जा रहे हैं। फिर ब्राह्मण को जब पूछा गया, तब उसने भी वही स्थान बताया। तो सामनेवालों ने कहा कि चलिये, हमारे साथ। हो गया काम ! वहाँ तक साथ मिल गया। इसके पहले कभी किसीसे बात ही नहीं करता था, क्योंकि जरूरत नहीं थी। गाँव में पहुँचने पर पूछा गया, "कहाँ ठहरेंगे ?" "यहीं किसी सराय में।" "हम भी सराय में ही ठहरने वाले हैं, चलिये हमारे साथ।" हो गया काम ! इस तरह मनुष्य जब आखिरी सहारा भी छोड़ देता है, तब उसको मदद मिलती है।"

एक साहित्यिक भाई से "आवाहन" और "आह्वान" का फर्क समझाते हुए बाबा ने कहा—"आवाहन याने "आमंत्रण," "Calling !" 'आह्वान' में "Challenge" का अर्थ है। आवाहन ईश्वर को होता है। उसमें नम्रता है। आवाहन में हम ईश्वर को आमंत्रण देते हैं। यह जो सृष्टि है, वह ईश्वर को आवाहन है। पहले "आवाहन" करके फिर "विसर्जन" करना उपासना की पद्धति है। सृष्टि-शास्त्र की भाषा में "आवाहन" याने उत्पत्ति है और विसर्जन याने प्रलय ! सृष्टि के आरंभ में ईश्वर का आवाहन करना होता है और फिर भक्तिपूर्वक विसर्जन करना होता है। "आवाहनार्थं च देवानाम्, आवाहनार्थं च देवानाम् गमनार्थम् च राक्षसाम् घंटानादं करोमि।" इस श्लोक में "आवाहन" और "आह्वान", दोनों हैं। 'देवों को आवाहन (आमंत्रण) देने के लिए' और दैत्यों को "तुम जाओ," ऐसा मैं (Challenge) आह्वान करता हूँ। विद्यार्थी जब वर्ग में प्रवेश करता है, तब घंटी बजती है। याने ज्ञान को आवाहन है और अज्ञान को आह्वान है। हमने व्यापारियों को आवाहन किया है, आह्वान नहीं। हमने "व्यापारियों को आवाहन" में उनको अत्यंत नम्रता से जो कहना था, वह अडोनी में कह दिया है। परंतु अभी तक व्यापारियों में से कोई आगे नहीं आया है। अगर इनमें से कोई जाग जायेगा, तो उनके पीछे बहुत लोग आयेंगे। जैसे जे. पी. (जयप्रकाशजी) और नव बाबू के पीछे बहुत लोग भूदान में आये हैं, वैसे इनमें से भी एक निकलना चाहिए। परंतु वे कहते हैं कि लोगों को जरा कठिन जा रहा है। वास्तव में उनको वह कठिन जा रहा है। परंतु हम दुबारा नहीं कहना चाहते हैं। आपके 'कुरळ' में तो कहा है कि "एक दफा भी ज्यादा है।" मैं दुबारा नहीं कहूँगा, क्योंकि मुझे उनकी इज्जत पर प्रहार नहीं करना है।

"विचार-प्रचार के लिए पहले के जमाने में शुरुआत में मिलीटरी जाती थी, फिर व्यापारी और आखिर में मिशनरी जाते थे। बीच के जमाने में शुरुआत में व्यापारी जाते थे, फिर मिलिटरी और आखिर में मिशनरी जाते थे। होना तो यह चाहिए कि सबसे पहले मिशनरियों को जाना चाहिए और फिर उनके बाद किसीको जाने की जरूरत ही नहीं। हाँ, उन्हींके विचारों में मानने वाले लोग जा सकते हैं। वैसे अपने देश में तो सिर्फ विचार-प्रचार के लिए बिना किसी सत्ताकांक्षा से बहुत से बौद्ध चीन, जापान, तिब्बत आदि दूर-दूर के देशों में गये हैं। भूदान का भी विचार स्वयं फैलेगा। यह जरूर होगा। हमको अंदर से विश्वास है कि वह समय आ रहा है कि लोग जाग रहे हैं और सर्वोदय की राह पर चल रहे हैं। यह श्रद्धा का सवाल है। एक श्लोक में ऋषि-पत्नी कह रही है कि "हे ज्ञानी जनो, सुनो ! ये सब लोग परमेश्वर के आश्रय में ही हैं, परंतु इसका उनको भान नहीं है। वे मानते हैं कि हम या तो पैसे के आश्रय में हैं या तो और किसी चीज के आश्रय में हैं।"

इतने में एक भाई ने एक नये ग्रामदान का समाचार सुनाया। वह सुन कर बाबा ने कहा, "अवतार हो रहा है, अवतार हो रहा है, यों बोलने से अवतार हो जाता है; वैसे सर्वोदय हो रहा है, ग्रामदान हो रहा है, बोला करो, तो सर्वोदय-ग्रामदान हो जायगा।"

तमिलनाड में कुल मिला कर २०० ग्रामदान मिले हैं।

www.vinoba.in

भूदान-आंदोलन के बढ़ते चरण

लोकसेवकों से प्राप्त विवरण : १ जनवरी से १५ फरवरी तक

आसाम : खगेश्वर भुयाँ—आसाम प्रदेश के ६ जिलों में १ जनवरी से ही काम व्यापक रूप से शुरू हो गया है। हर जिले में ६ से १५ कार्यकर्ता घूम रहे हैं।

श्री सोमेश्वर बाँसवती, लखीमपुर-जिले में सामूहिक पदयात्रा के दो शिविर हुए। करीब १६३ गाँवों में तीन सौ मील पदयात्रा हुई। २४३ दाताओं द्वारा १८७६ बीघा जमीन मिली और ५६ दाताओं द्वारा करीब ६००) वार्षिक सम्पत्तिदान मिला। पहले शिविर में १९ और दूसरे में १४ कार्यकर्ताओं ने भाग लिया।

उड़ीसा : श्री वृन्दावन लाल, पुरी—थाना-भूदान-सम्मेलन और सामूहिक पदयात्राएँ चल रही हैं। स्थानीय लोगों का विपुल समर्थन मिलता है। पूरा समय और आंशिक समय देने वाले कार्यकर्ता भी बहुत निकलते हैं।

उत्तर प्रदेश : (१) श्री अवधविहारी, आजमगढ़—११ जनवरी से ११ फरवरी तक कुल ३०० मील पदयात्रा पूरे आजमगढ़ जिले में सूतांजलि के लिए हुई।

(२) श्री राजनारायण त्रिपाठी, दुबेपुर, उन्नाव—जनवरी १ से १५ तक करीब ९० मील पदयात्रा हुई। १८ गाँवों में संदेश पहुँचाया। १२ फरवरी तक सर्वोदय-यात्रा।

(३) श्री बांकेविहारी चंद्र, आनंदनगर, गोरखपुर—सामूहिक पदयात्रा चल रही है।

(४) श्री कामेश्वर प्रसाद बहुगुणा, टिहरी—हर वर्ष की तरह १४ जनवरी से २१ जनवरी तक मकर-संक्रांति के अवसर पर उत्तर काशी में तृतीय भूदान-सम्मेलन किया गया। करीब ३० कार्यकर्त्ताओं ने भाग लिया।

(५) श्री राजबली तिवारी, फैजाबाद—सामूहिक पदयात्रा चल रही है। करीब १८४ गाँवों में यात्रा हुई।

(६) श्री नारायण वाजपेयी, बाराबंकी—१३ जनवरी से २० फरवरी तक २२७ गाँवों में पदयात्रा हुई।

बिहार (१) डा० शत्रुहन, मुजफ्फरपुर—ता० २७-१-५७ को हाजीपुर के सब-डिविजन मिर्जापुर गाँव का ग्रामदान हुआ। ता० २९-१-५७ को श्री जयप्रकाशजी के दौरे पर माधोपुर सुन्दरग्राम का ग्रामदान हुआ। इलाके में मालकियत-विसर्जन का वातावरण बना। फुलवारीं गाँव के ५० परिवारों के मालकियत-विसर्जन की घोषणा की। महीने में भूदान-यज्ञ के १५ ग्राहक बने। ५२ सम्पत्ति-दान-पत्र मिले।

(२) श्री रामनारायण सिंह, मुंगेर—मुंगेर जिले के पाँच क्षेत्र बनाये गये। सघन पदयात्रा की पूर्व-तैयारी का काम चलता रहा। २९ जनवरी को संग्रामपुर में तारापुर थाने का शिविर और ग्रामराज-सम्मेलन श्री धीरेन्द्र भाई की अध्यक्षता में हुआ।

(३) श्रमभारती, खादीग्राम, मुंगेर—१६ फरवरी को खादीग्राम के पड़ोस के लखमटिया गाँव का ग्रामदान हुआ। कुल ३७ परिवार और करीब १२५ एकड़ जमीन है। ता० २३ फरवरी को लभेत गाँव का आंशिक दान हुआ।

(४) श्री महेन्द्रकुमार सिन्हा, ‌‌‌‌डुमरी, जिला-शाहाबाद—माह जनवरी में २४ गाँवों में भूदान-संदेश पहुँचाया। सम्पत्तिदान भी हुआ।

(५) श्री हरिप्रसाद, भभुआ, जिला-शाहाबाद—८८) रुपये की साहित्य-बिक्री और १५० मील की पदयात्रा की। ५० गाँवों में भूदान-प्रचार किया। "निधि-मुक्त हो जाने पर भी भूदान काम में लगा हुआ हूँ।"

बंगाल : (१) श्री क्षितीशराय चौधरी, बलरामपुर-मिदनापुर जिले में सामूहिक पदयात्रा निरंतर चल रही है। औसत २५ कार्यकर्ता बराबर घूम रहे हैं। केशपुर और खड़गपुर थानों में पदयात्रा हो चुकी है। करीब १०० एकड़ जमीन २४२ दानपत्रों द्वारा मिली। करीब ३७५ दानपत्र वार्षिक ४०००) रुपये रकम के मिले। भूदान-पत्रिका के ४३ ग्राहक बने और करीब ३५० रुपये का साहित्य बिका।

(२) श्री चारुचंद्र भंडारी, कलकत्ता—२४ परगना जिले के उत्तर और दक्षिण कुल्पी थाने में ३३७ गाँवों में २२ जनवरी से २७ फरवरी तक २४ कार्यकर्ताओं ने सामूहिक पदयात्राएँ कीं। २८० दान-पत्रों द्वारा करीब ४९ एकड़ भूमिदान मिला। यहाँ की भूमि करीब २५००) एकड़ कीमत की है। १४२२) वार्षिक के १७८ संपत्तिदान-पत्र मिले। ३६८ अन्नदान मिला। २१६) की साहित्य-बिक्री हुई। पूरा समय देने वाले दो कार्यकर्ता मिले।

बम्बई-महाराष्ट्र : (१) श्री निर्मला देशपांडे—३० जनवरी को कार्यारम्भ किया। क्षेत्र सर्वथा अपरिचित था। प्रथम ३-४ दिनों तक प्रमुख व्यक्तियों के साथ परिचय का काम चलता रहा। फिर स्कूल-कालेज आदि में भाषणों का क्रम चला। कुल १४ भाषण हुए। विद्यार्थी तथा शिक्षकों में काफी उत्साह दिखाई दिया। एक स्कूल की छोटी लड़कियाँ घर-घर घूम कर साहित्य बेचती हैं। अब तक करीब २०० किताबें बेची गयीं, जिनमें १५० से अधिक "गीता-प्रवचन" हैं।

(२) श्री मोहनलाल पाण्डवीय—सर्वोदय-पक्ष में २४ गाँवों में पदयात्रा की। भूदान मिला, साहित्य-बिक्री हुई। जनवरी से अब तक ५७ ग्राहक भूदान-पत्रिका के बने हैं। फिलहाल पूरी शक्ति वितरण के काम में लगा रहा हूँ।

(३) श्री विट्ठलदास बोदाणी, राजकोट—१ से १५ फरवरी तक विद्यार्थियों की १४ सभाओं में भाषण दिया। विद्यार्थियों में विचार-प्रचार तथा व्यक्तिगत सम्पर्क जारी है। कताई होती है।

(४) श्री द्वारकादास जोशी, महेसाणा, सिद्धपुर तालुका में सामूहिक पदयात्रा जारी रही। ६ टोलियों द्वारा ४६ गाँवों में पदयात्रा हुई। भूदान, सम्पत्तिदान आदि मिला। साहित्य-प्रचार व बिक्री हुई। फरवरी में महेसाणा तालुका में सामूहिक पदयात्रा की पूर्व-तैयारी की गयी। वीसनगर कालेज में छात्रों में भूदान-प्रचार किया।

मध्यप्रदेश : (१) श्री नाथूराम सक्सेना, टीकमगढ़—सामूहिक पदयात्रा तहसील टीकमगढ़ में हुई। करीब १४० बीघा भूदान प्राप्त हुआ। साहित्य-बिक्री हुई।

(२) श्री जसवन्तराय, नरसिंहपुर—१ जनवरी से १४ फरवरी तक प्रारम्भिक कार्य हुआ। पुरानी सूचियाँ आदि व्यवस्थित कीं। ३० जनवरी से एक वर्ष के लिए गृह-त्याग किया।

(३) श्री पाटणकर, बैतूल, १ से १५ फरवरी तक बैतूल शहर तथा हाई स्कूल में चार सभाएँ कीं। बैतूल में सर्वोदय-स्वाध्याय-मंडल की स्थापना की।

(४) श्री दीपचन्द जैन, रतलाम—१५ फरवरी तक भूदान-प्रचार के निमित्त विभिन्न गाँवों में दौरा किया। पहले मिली हुई जमीन का प्रमाणीकरण आदि कराया। साहित्य-बिक्री हुई।

मैसूर : (१) श्री एस० गुंडाचार, बंगलौर—पहले मिली हुई जमीन के वितरण पर ध्यान देना जरूरी समझा। अतः जनवरी में ३-४ फिरकों में वितरण का काम किया। सम्पत्तिदान-पत्र भी मिले।

(२) श्री निवास अयंगार, मेलूकोटे—जनवरी माह में करीब २२ कस्बों और गाँवों में भूदान-प्रचार किया। भूमि-वितरण भी किया।

पंजाब : (१) श्री निरंजन सिंह, जिला-करनाल—१ से १५ फरवरी तक पानीपत तहसील में दो टोलियों ने २७० मील की पदयात्रा करके २४ गाँवों में भूदान-संदेश पहुँचाया। केरल से शुरू हुई अखिल भारतीय भूदान-पदयात्रा दल के ८ पड़ाव इस जिले में हुए। भूदान, सम्पत्तिदान आदि मिला।

(२) श्री फतेहचंद नाहटा, ऐलनाबाद (हिसार)—१५ फरवरी तक अम्बाला शहर में सम्पत्तिदान का प्रचार किया। ता० १२ फरवरी को मिल्लौर में होने वाले सर्वोदय मेले में भाग लिया।

(३) श्री गणेशीलाल, हिसार—जनवरी में दो टोलियों ने १३० मील की पदयात्रा द्वारा २८ गाँवों में प्रचार किया। करीब ३५० बीघा भूदान मिला। हिसार शहर में कई स्कूलों में विचार प्रचार किया।

राजस्थान : (१) श्री भगवानदास माहेश्वरी जैसलमेर—१ से १५ जनवरी तक तीन साथियों के साथ जैसलमेर, बीकानेर, जोधपुर, इन तीनों जिलों की सीमा पर पदयात्रा के लिए निकले। 'देदावतों का बेरा' सर्वप्रथम ग्रामदान में मिला। उसके बाद जैसलमेर में 'बिठेकर' गांव भी ग्रामदान में मिला।

(२) श्री भवानी भाई, झुनझुनूं—१५ फरवरी तक पदयात्रा जारी रही। कुल २० गाँवों में १२४ मील पदयात्रा हुई। साहित्य-बिक्री हुई। पत्रिकाओं के ग्राहक बनाये।

(३) श्री माणिक्यलाल विद्यार्थी, डुंगरपुर—१५ फरवरी तक कुल २१५ मील की पदयात्रा द्वारा ३२ गाँवों में प्रचार किया। सूतांजलि के लिए प्रचार किया गया। १२ फरवरी को वेणेश्वर धाम पर सर्वोदय-मेला लगा। दोनों जिले के कार्यकर्ताओं का सम्मेलन श्री जवाहर लालजी जैन की अध्यक्षता में हुआ, जिसमें करीब १७५ कार्यकर्ता शामिल थे।

(४) श्रीजगन्नाथ फसारा, परतापुर, बांसवाड़ा—ता० १६ से २८ जनवरी तक ९९ मील की पदयात्रा की। कुल २६ सभाएँ कीं, जिनमें सूतांजलि और भूदान पर प्रकाश डाला। ३१ जनवरी को फिर पदयात्रा में रवाना हुआ। १२ फरवरी को वेणेश्वर धाम पर पहुँचा। ६० मील की यात्रा हुई।

(५) श्री वैद्य प्रभुदयाल, भरतपुर—१२ फरवरी तक भरतपुर तहसील में पदयात्रा द्वारा विचार-प्रचार किया। पहली बार जिले में सर्वोदय-मेले का आयोजन किया। स्कूल कालेजों में श्री पूर्णचंद्रजी तथा श्री जवाहरलालजी जैन के भाषण हुए।

अ. भा. सर्व-सेवा-संघ, खादीग्राम (मुंगेर) —सिद्धराज ढड्ढा, सहमंत्री

www.vinoba.in

भूदान-आन्दोलन के बढ़ते चरण

गुजरात

मध्य सौराष्ट्र में ३० जनवरी से १८ फरवरी तक तीन कार्यकर्ताओं ने २० देहातों की पदयात्रा की। फलस्वरूप ९५ बीघा भूदान, ६ समयदान, ६ श्रमदान मिले। ७०) की साहित्य-बिक्री हुई। ४२६ बीघा भूमि १७ परिवारों में वितरित की गयी। ६ गाँवों ने स्थानिक भूदान-समितियाँ बनायीं। राजकोट में विद्यार्थियों में जागृति निर्माण करने के हेतु से पाँच सभाएँ की गयीं।

मध्यप्रदेश में अखंड पदयात्रा की फलश्रुति

९ जून ५६ को श्री दादाभाई नाईक, डोनाल्ड ग्रूम, शंकरदेव 'मानव', विजयसिंह ठाकुर, श्रीराम व मैं–मध्यप्रदेश में प्रांतीय-अखंड यात्रा करने निकले थे। पू० बाबा के आदेश से ९ फरवरी '५७ को, आठ माह बाद, यह पदयात्रा समाप्त हुई।

इन आठ माहों में जिले की ३२ तहसीलों के ३०० गाँवों में २००० मील की पैदल यात्रा की। १०४४ दाताओं द्वारा २५३७ एकड़ जमीन प्राप्त हुई। ३६० दाताओं द्वारा २१५५) वार्षिक के संपत्ति-दान-पत्र प्राप्त हुए। १० दाताओं द्वारा ५८६) का साधनदान मिला। ५० दाताओं द्वारा ४०० मन धान प्रतिवर्ष ५ साल तक के लिए प्राप्त हुआ। १४००) की साहित्य-बिक्री हुई। ७० साम्ययोग और ३ भूदान-यज्ञ ग्राहक बने। १२० समयदानी तथा १५ जीवनदानी भाई भूदान-कार्य के लिए तैयार हुए। २२ भूमिहीन परिवारों में १०६ एकड़ भूमि का वितरण हुआ।

जिस-जिस जिले में हम गये, वहाँ के बहुत-से भाई-बहन हमारे साथ रहे, हमें कोई कष्ट न हो तथा कार्य बढ़े, इसके लिए उन्होंने अथक परिश्रम किया। अब टोली के सब साथी अलग-अलग एक-एक जिले में कार्य कर रहे हैं। —आशा जैन

सर्वोदय-मेला-विवरण

ग़ाज़ीपुर जिले की तीन तहसीलों में सर्वोदय-पक्ष के अवसर पर तीन टोलियाँ पदयात्रा के लिए निकली थीं। ५५०) वार्षिक के संपत्ति-दान-पत्र, सोने की दो चूड़ियाँ और चार बीघा भूमि जमीनियाँ तहसील की पदयात्रा-टोली को दान में मिली। इस टोली ने १३७) का सर्वोदय-साहित्य बेचा। २६ गाँवों में सभाएँ कीं।

सहारनपुर, हमीरपुर, बाराबंकी, फैजाबाद, गोरखपुर और बनारस जिलों में भी सर्वोदय-पक्ष बड़े व्यवस्थित ढंग से मनाया गया। सेवापुरी-आश्रम के समीपस्थ तीन गाँवों से ३२ बीघा भूमि तथा वार्षिक १५०) और ६) अन्न के सम्पत्तिदान-पत्र मिले। ६ सज्जनों ने समय-दान का संकल्प लिया।

देवरिया जिले में सर्वोदय-मेला बनकटा में लगा। कृषि, गन्ना, खादी, पशु की प्रदर्शनियाँ रखी गयी थीं। "पावन प्रकाश" नाटक खेला गया। पशुओं, कृषि के औजारों तथा अन्य कार्यों पर करीब ६००) के पुरस्कार खादी एवं सर्वोदय-साहित्य के रूप में दिये गये। चरखा, तकली दंगल, सामूहिक कताई, अखंड सूत्रयज्ञ और कीर्तन का कार्यक्रम हुआ। मेले में ४८) की साहित्य-बिक्री, २००) की खादी-बिक्री हुई। ११५ गुंडियाँ सूतांजलि में मिलीं।

बड़वानी शहर से तीन मील दूर नर्मदा-किनारे राजघाट पर सर्वोदय-मेला लगा, जिसमें विभिन्न स्थानों से आये पदयात्री-टोलियों ने भाग लिया। प्रार्थना, प्रभात फेरी, गीता-पारायण, सामूहिक सूत्रयज्ञ आदि के कार्यक्रम हुए। छात्राओं द्वारा "पहली रोटी" प्रहसन खेला गया। करीब १३०० गुंडियाँ सूतांजलि में अर्पित हुईं।

भीलवाड़ा जिले में त्रिवेणी-संगम रीगोद में सर्वोदय-मेला गांधी-स्मारक-निधि की सूतांजलि-समारोह हुआ।

बडनगर में सर्वोदय-मेला हुआ। करीब १५०० सूतांजलि की गुंडियाँ और करीब १००० सूत्रदान में गुंडियाँ मिलीं।

राजस्थान में वेणेश्वर धाम पर सर्वोदय-मेला लगा। यह स्थान बांसवाड़ा और डुंगरपुर की सीमा पर सोन तथा माही नदी के संगम पर है। करीब २००० गुंडियाँ सूतांजलि में समर्पित हुईं।

भरतपुर जिले में पहली बार सर्वोदय-मेले का आयोजन हुआ। करीब २७०० सूतांजलि प्राप्त हुईं।

कृषि-सुधार-केन्द्र, देगलूर (हैदराबाद) के सर्वोदय-मेले में ६५ सूतांजलि मिलीं।

सर्वोदय-विचार-केन्द्र के तत्त्वावधान में गांधीघाट, पुष्कर (राजस्थान) में सर्वोदय-मेले का आयोजन हुआ। अध्यक्ष गोकुलभाई भट्ट का प्रेरक भाषण हुआ।

प्रकाशन-समाचार

छात्रों के बीच (द्वितीय संस्करण) जयप्रकाश नारायण पृष्ठ ८०, मूल्य ।-)

श्री जयप्रकाश बाबू की उक्त पुस्तक के इस संस्करण में पृष्ठ ६४ की अपेक्षा ८० हो गये हैं और मूल्य चार आने के बजाय पाँच आने। वर्तमान विषम परिस्थितियों में, जब कि जयप्रकाशजी छात्रों को सत्तावन् की क्रांति के लिए आवाहन कर रहे हैं, यह संशोधित एवं परिवर्धित संस्करण पाठकों को बहुत उपयोगी सिद्ध होगा।

सम्पत्तिदान (आठवाँ संस्करण) श्रीकृष्णदास जाजू पृष्ठ ९२, मूल्य ॥)

नये संस्करण में भूदान के अलावा सर्वोदय-सम्मेलनों की राष्ट्रविषयक चर्चाओं तथा सर्व-सेवा-संघ की बैठकों में पारित प्रस्तावों और निर्णयों के जुड़ जाने से यह पुस्तक परिपूर्ण हो गयी है। स्व. जाजूजी की जीवन-झाँकी और संपत्तिदान के कुछ पावन-प्रसंग भी इसमें जोड़ दिये गये हैं।

—अ० भा० सर्व-सेवा-संघ-प्रकाशन, राजघाट, काशी

संवाद-सूचनाएँ :

विशिष्ट व्यक्तियों के दौरे का कार्यक्रम

विभिन्न प्रांतों तथा जिलों में भूदान-काम के लिए श्री धीरेन्द्र भाई, श्री जयप्रकाशजी, श्री शंकररावजी, श्री दादा धर्माधिकारी तथा श्री विमला बहन आदि के समय की माँग होती रहती है। सब कार्यकर्ताओं से निवेदन है कि उपरोक्त व्यक्तियों के कार्यक्रम के बारे में वे सीधे उन्हें न लिख कर अखिल भारत सर्व-सेवा-संघ, पो० खादीग्राम (जिला, मुंगेर) बिहार को लिखें, जिससे उनका कार्यक्रम बनाने में सुविधा हो। —सिद्धराज ढड्ढा, सहमंत्री

भूल सुधार

ता० ८ मार्च के 'भूदान-यज्ञ' में पृष्ठ ११ पर श्री शंकररावजी देव का जो वक्तव्य छपा है, उसमें अंतिम पंक्ति में स्थान 'आश्रम; सासवड़ (पुणें)', ऐसा भूलवश लिखा गया है। वस्तुतः उसकी जगह निसर्गोपचार आश्रम, उरुळी-कांचन (पुणें) ही चाहिए।

इसी तरह उसी अंक में १२ वें पृष्ठ पर छपे लेख में "श्री शंकररावजी एक महीने तक उरुळी में ही रहेंगे," ऐसा जिक्र है। हमें ज्ञात हुआ है कि ऐसा कोई निश्चय अभी नहीं हुआ है और भविष्य का उनका कार्यक्रम भी अभी बना नहीं है।

—सम्पादक

विनोबाजी की पदयात्रा का कार्यक्रम

मदुराई जिले में मार्च ता० २३ पुळियम्पट्टी, २४ एस.पी. नाथम्; २५ नेडुंकीळम्। रामनाड जिले में–मार्च ता. २६ करियापट्टी, २७ तिरुचुलियम्, २८ रेड्डिपट्टी, २९ अरुप्पुकोट्टाई, ३० वीरुदनगर, ३१ अम्मात्तुर। अप्रैल ता० १ शिवकाशी, २ श्रीविल्लिपुत्तुर और ३ राजपाळयम्।

पत्रव्यवहार का पता : मदुराई जिले के लिए : C/o खादी वस्त्रालय, तिरुमंगलम् Tirumangalam (Madurai)। रामनाड जिले के लिए : C/o खादी वस्त्रालय, राजपाळयम् P.O. Rajapalayam (Dist. Ramnad)

विनोबाजी ता० १३ और १४ अप्रैल को कन्याकुमारी में रहेंगे। ता० १८ अप्रैल को वे केरल में प्रवेश करेंगे।

सर्वोदय-सम्मेलन की ता० ९ और १० मई निश्चित हुई है।

विषय-सूची

१. सन् सत्तावन् की क्रांति कैसे होगी ?	ठाकुरदास बंग	१
२. आगामी दस मास का कार्यक्रम कैसा हो ?	विमला बहन	२
३. भूदान-यज्ञ की आध्यात्मिक भूमिका	विनोबा	३
४. तमिलनाड़ की क्रांतियात्रा से—	महादेवी	४
५. प्रश्नोत्तरी	धीरेंद्र मजूमदार	५
६. कर्नाटक में ग्रामदान-गंगा का अवतरण	बाबू कामत	५
७. ग्रामदान का अमृत-बिंदु !	विनोबा	६
८. 'रामायण' भगवत्-लीला है, इतिहास नहीं !	—	६
९. बिहार के भूदान-कार्यकर्ताओं को आवश्यक सूचनाएँ	वैद्यनाथप्रसाद चौधरी	७
१०. भूदान-आंदोलन की असली ताकत कौनसी है ?	विनोबा	८
११. 'भाई के वास्ते भूखी रह जाऊँ !' ...	गोकुलभाई भट्ट	८
१२. व्रजभूमि में पदयात्रा	पूणचंद्र जैन	९
१३. तमिलनाड़ की भूदान-यज्ञ-वार्ता–	मीरा व्यास	१०
१४. भूदानयज्ञ-आंदोलन के बढ़ते चरण	...	११
१५. समाचार, सूचनाएँ आदि	...	१२

सिद्धराज ढड्ढा सहमंत्री, अ० भा० सर्व-सेवा-संघ द्वारा भार्गव भूषण प्रेस, वाराणसी में मुद्रित और प्रकाशित। पता : पोस्ट बॉक्स नं० ४१, राजघाट, काशी

www.vinoba.in